ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

फाल्गुन-चेत संवत् नानकशाही ५५३-५४ मार्च 2022 वर्ष १५ अंक ७

आओ, होला-महल्ला की मूल भावना के साथ जुड़ें!

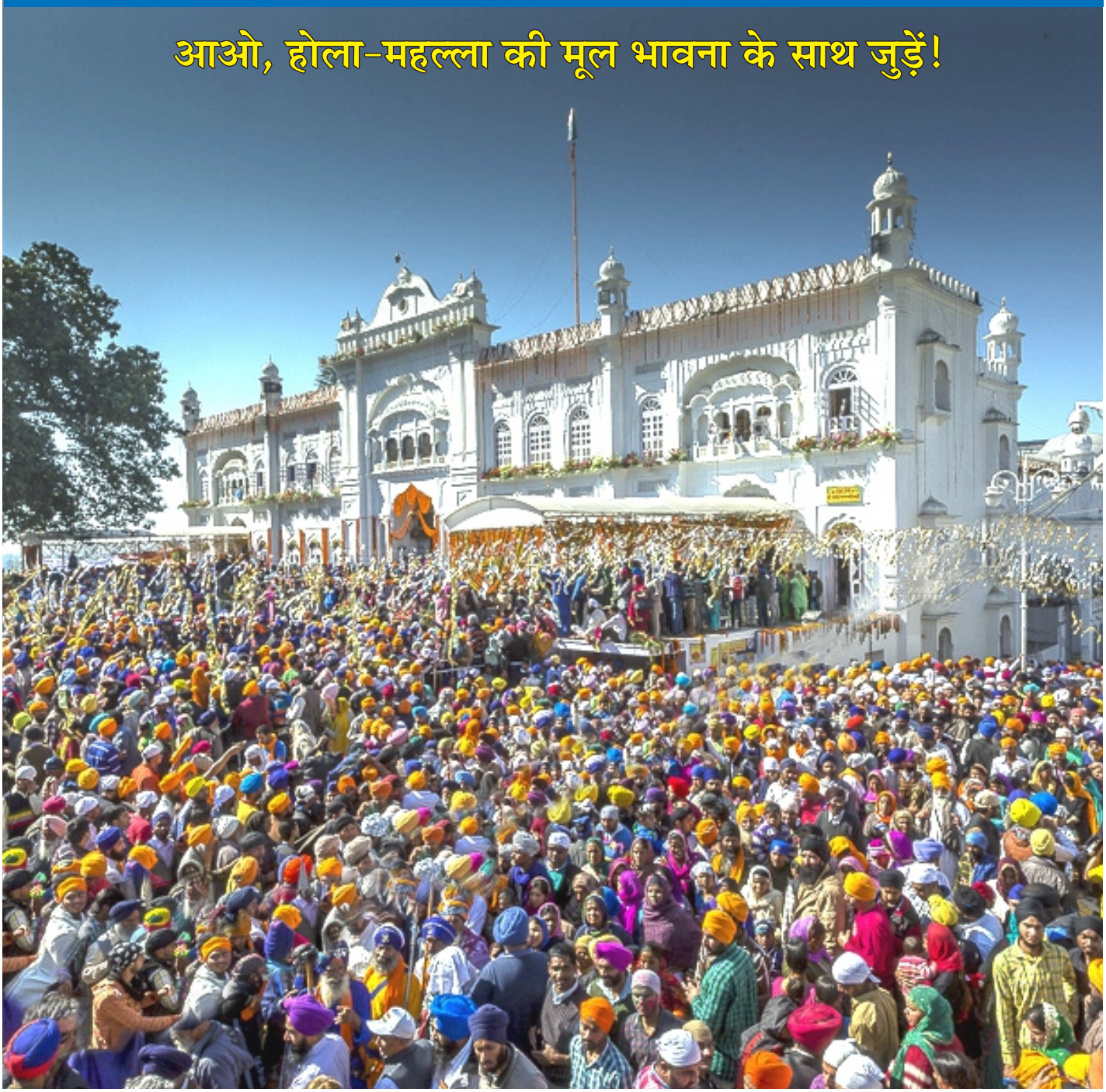

गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही 553-54
वर्ष 15 अंक 7 मार्च 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंह
संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
होली तथा होला-महल्ला 8
-डॉ.परमजीत कौर
पाउंटा साहिब का होला-महल्ला 12
-स. भगवान सिंह जौहल
अद्वितीय शहीद : भाई तारा सिंह वाँ 14
-डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल
. . . . सरदार बघेल सिंह 16
-डॉ.मनजीत कौर
स्वतंत्रता का सितारा : सरदार भगत सिंह शहीद 21
-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'
जपु जी साहिब : एक विश्लेषण 25
- डॉ. जसकिरन कौर
जापु साहिब 28
-डॉ. जसबीर सिंह
आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ 3०
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंह
बुझु रे गिआनी एहु बीचारु 36
-डॉ. नरेश
गुरमुखि बुढे कदे नाही . . . 38
- स. तरसेम सिंघ
गुरबाणी तथा लोक-संगीत 4०
-प्रो. पिआरा सिंघ पद्म (दिवंगत)
. . . बीबी भानी जी कन्या नेत्रहीन विद्यालय 44
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२ ॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस काल-खंड को प्रभु-नाम-चिंतन-मनन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। यदि इस समय अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए जिह्वा से प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आना सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन यही है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ *(पन्ना १२)*

गुरु पातशाह प्रत्येक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, आकाश में, धरती पर व्याप्त हो रहा है, यदि

ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुर्भाग्य होगा! दूसरी ओर जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की कामना करता है, मन में उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चेत्र मास में जो मुझे परमात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूँ!

बारह माहा मांझ की पहली पावन पउड़ी, जिससे यह पावन बाणी प्रारंभ होती है, इस प्रकार है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१ ॥ *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप अपनी कृपा कर हमें अपने साथ मिला लो। चारों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां ? जिस हृदय रूपी घर में प्रभु-पति नहीं प्रकट होते वह हृदय रूपी घर भट्ठी जैसा दुखदायक प्रतीत होता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अथवा बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे स्वामी! कृपा कर अपना नाम प्रदान कर दो। हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है।

संपादकीय

श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला

हर पल अपने आप में नूतन होता है। जो प्रभु-नाम में लीन है, जो इस शारीरिक जामे (जन्म) को परमात्मा के साथ मिलाप करने के साधन के रूप में लेता है, वह जीवन को प्रसन्नता, उमंग और उत्साह में सफल करेगा। चिंता, उदासी और निराशा के बुरे प्रभाव से वह बचा रहता है तथा जीवन गुज़ारता हुआ अपने जिम्मे लगा हरेक ज़रूरी फ़र्ज़ सही ढंग के साथ निभाता है। ऐसे कर्म करने वाले लोगों की इस संसार में संख्या किसी युग में भी ज़्यादा नहीं होती। वे ''विरले केई केइ'' गुरु-वाक्य के अनुसार बहुत ही चुनिंदा होते हैं।

दूसरी तरह के लोगों की ज़िंदगी में विशेष रूप से नवीनता, ताज़गी, रंग और रस का संचार करने के उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए हमारे बुद्धिमान अनुभवी बुज़ुर्गों ने त्योहारों की योजनाबंदी की। शायद हमारे देश भारत के लोगों के जीवन में मेहनत की बहुतायत है, जिसके फलस्वरूप यहाँ दूसरे देशों/ कौमों की तुलना में त्योहारों की संख्या ज़्यादा है। हमारे ज़्यादातर त्योहार जहाँ ऋतुओं के बदलाव के सूचक हैं, वहीं उनकी सांस्कृतिक, लौकिक, नैतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी है। होली और होला-महल्ला हमारे ऐसे ही त्योहार हैं।

होली हमारे देश में सदियों से मनायी जा रही है, जिसका सम्बन्ध फाल्गुन महीने की सुहावनी ऋतु के साथ है। इस ऋतु में हम सर्दी की कड़क ठंड के बाद सुख-आराम का अनुभव करते हैं। होली के साथ परमात्मा के सच्चे भक्त प्रहलाद और उसके क्रोधी व कठोर स्वभाव वाले पिता, जिसने उसे मौत की सज़ा दे दी थी, का लोक-प्रचलित प्रसंग भी जुड़ा हुआ है। बुराई की अंतत: हमेशा पराजय होती है और बुरे व्यक्ति की नैया हमेशा बुरे कर्मों से भर कर डूबती है। भाई गुरदास जी ने अपनी दसवीं वार की दूसरी पउड़ी में प्रभु-मालिक द्वारा भक्त प्रहलाद की रक्षा करने का वृत्तांत संक्षिप्त रूप में अंकित किया है :

घरि हरणाखस दैत दे कलरि कवलु भगतु प्रहिलादु।
पढ़न पठाइआ चाटसाल पांधे चिति होआ अहिलादु।
सिमरै मन विचि राम नाम गावै सबदु अनाहदु नादु।
भगति करनि सभ चाटड़ै पांधे होइ रहे विसमादु।
राजे पासि रूआइआ दोखी दैति वधाइआ वादु।
जल अगनी विचि घतिआ जलै न डुबै गुर परसादि।
कढि खड़गु सदि पुछिआ कउणु सु तेरा है उसतादु।
थंम्हु पाड़ि परगटिआ नरसिंघ रूप अनूप अनादि।
बेमुख पकड़ि पछाड़िअनु संत सहाई आदि जुगादि।
जै जैकार करनि ब्रहमादि ॥२॥

होलिका की बुरी नीयत की हुई पराजय का लोगों द्वारा नाच कर, मिट्टी आदि उड़ा कर जश्न मनाया गया, जो होली कहलाता है। सही सोच के धारक लोगों ने इसमें एक-दूसरे पर रंग डालने आदि को शामिल किया तो होली का त्योहार रंगों के त्योहार के रूप में विकसित हो गया। मानवीय बुद्धिमता में गलत दिशा में जाने का जो रुझान है, उसने रंगों को एक-दूसरे पर डाल कर, एक-दूसरे के साथ खुशियाँ बाँटने की जगह अन्य कई तरह की गलत शरारतों को इसमें शामिल कर दिया, जिस कारण अत्यंत हानिकारक रासायनिक रंगों का प्रयोग होने लगा। मिट्टी उड़ाना, कीचड़ फेंकना, टोलियाँ बना कर बाज़ारों में खड़े होकर राहगीरों को तंग करना होली का एक ज़रूरी अंग मान लिया गया।

जब साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन-काल के दौरान लोगों को ऐसे भद्दे ढंग के साथ होली मनाते देखा-सुना तो अपने प्यारे सिक्ख पंथ/ खालसा पंथ को होला-महल्ला के रूप में खालिस खालसाई त्योहार प्रदान किया, जो जहाँ होली की प्रचलित कुरीतियों से पूरी तरह से रहित और निर्मल है, वहीं इसे मनाने के लिए प्रदान किया गया ढंग भी खालसा पंथ में वाह्य और आंतरिक दोनों रूपों में वीर-रस का संचार करने वाली गुरमति भावना से भरपूर है।

होला-महल्ला गुरु जी की अपनी देख-रेख और नेतृत्व में खालसा पंथ की जन्म-भूमि श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र धरती पर संवत् १७५७ बिक्रमी अथवा नानकशाही संवत् २३१ मुताबिक सन् १७०० बिक्रमी में मनाया जाना आरंभ हुआ। अपनी खालसयी फौज को चुस्त-दरुस्त और सदक्रियाशील रखने, उसे हरेक चुनौती का सामना करने के लिए तैयार-बर-तैयार रहने के लिए तथा और भी दृढ़ करने के उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु गुरु जी ने सिंघों को दो दलों में बाँट कर कृत्रिम जंग करवाई। एक दल को किला होलगढ़ के रक्षक के रूप में तैनात कर दिया और दूसरे दल को किले पर हमला करने का हुक्म दिया। दोनों दलों के सिंघ सेनानियों की अलग-अलग पहचान के लिए दोनों को अलग-अलग रंग की पोशाक पहनाई गई। इतिहास में वर्णन मिलता है कि हमला करने वाले दल ने विजय प्राप्त की, जिसे गुरु जी ने विशेष रूप से सम्मानित किया। दोनों दलों के सिंघों को पेट भर कड़ाह-प्रसाद छकाया गया। यह याद रहे कि इस कृत्रिम युद्ध में गुरु जी ने तीर-कमान आदि शस्त्रों के प्रयोग पर पाबंदी लगाई हुई थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा प्रदान किये गए खालसई होला-महल्ला की परंपरा को गुरु जी के साजे-निवाजे खालसा पंथ ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर एक अमूल्य खजाने के तौर पर सँभालने के लिए हर संभव यत्न किया है। हर वर्ष फाल्गुन माह में सिक्ख संगत अति उत्साह एवं श्रद्धा-भावना के साथ इन्तज़ार करती है कि कब होला-महल्ला का दिन आए और वह श्री अनंदपुर साहिब पहुँच कर साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र दरबार में हाज़री भरे। श्री अनंदपुर साहिब में होला-महल्ला का नज़ारा इतना न्यारा होता है जो शब्दों में बयान करना मुश्किल है। इस नज़ारे की विलक्षणता को मात्र देखने से ही महसूस किया जा सकता है।

नगर कीर्तन तख़्त श्री केसगढ़ साहिब से आरंभ होकर किला होलगढ़ और माता जीतो जी के देहुरे की यात्रा करता हुआ चरण-गंगा के खुले रेतीले मैदान में पहुंच जाता है। वह संगत बहुत सौभाग्यशाली होती है जो इस नगर कीर्तन में शामिल होती है। हम सबको होला-महल्ला के अवसर पर श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र धरती पर पहुँच कर नत्मस्तक होना चाहिए।

होली तथा होला-महल्ला

-डॉ. परमजीत कौर*

भारतवर्ष उत्सव प्रधान देश है। वैसाखी, दशहरा, बसंत, होली आदि त्यौहार बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं। मूलत: होली रंगों का त्यौहार माना जाता है। इस दिन पारस्परिक वैमनस्य को भुलाकर गुलाल आदि रंग एक दूसरे को लगाकर प्रसन्नता प्रकट की जाती है।

होली का सम्बन्ध हिरण्यकश्यप तथा उसके पुत्र प्रहलाद की कथा से माना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार प्रहलाद प्रभु का भक्त था तथा केवल प्रभु में ही श्रद्धा-भक्ति रखता था, परमात्मा को ही सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्वीकार करता था। उसका पिता राजा हिरण्यकश्यप बहुत अभिमानी, क्रूर व नास्तिक था। वह अपने को ईश्वर मानता था तथा चाहता था कि प्रजा के सभी लोग उसकी पूजा करें तथा उसके नाम का जाप करें। वह चाहता था कि प्रहलाद भी उसकी शक्ति का लोहा माने तथा उसी के नाम का जाप करे, परन्तु प्रहलाद को यह स्वीकार न था। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद पर बहुत अत्याचार किये तथा उसे कई तरह से नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया।

प्रचलित कथा के अनुसार होलिका हिरण्यकश्यप की बहन थी। अपनी पूर्व तपस्या के कारण उसके पास दैवी शक्ति द्वारा प्रदत्त एक चादर थी तथा यह वर प्राप्त था कि यह चादर अग्नि से उसकी रक्षा कर सकती है। जब हिरण्यकश्यप प्रहलाद को मारने में असफल रहा तो होलिका ने उसकी सहायता करनी चाही। वह चादर ओढ़ कर प्रहलाद को अपनी गोद में बिठाकर अग्नि में बैठ गयी, मगर परमात्मा की कृपा से चादर उड़कर प्रहलाद पर चली गयी। इस तरह प्रहलाद बच गया तथा होलिका जल कर मर गयी। अंत में हिरण्यकश्यप ने एक खंभे को गर्म किया तथा प्रहलाद को ललकारा कि अब तेरी रक्षा कौन करेगा? भगवान चींटी का रूप धारण कर खंभे पर प्रकट हुए यह देखकर प्रहलाद खंभे से लिपट गया। प्रहलाद का बाल भी बांका न हुआ। प्रभु ने नरसिंह का रूप धारण कर हिरण्यकश्यप का संहार किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी इस सबंधी जिक्र है:

— हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि॥
हरि तेरा कहा तुझ लए उबारि॥
खिन महि भैआन रूपु
निकसिआ थंम्ह उपाड़ि॥
हरणाखसु नखी बिदारिआ
प्रहलादु लीआ उबारि॥ *(पन्ना ११३३)*
— काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ॥

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— फोन : ९८१२३-५८१८६

तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥
प्रभ थंभ ते निकसे कै बिसथार ॥
हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥४ ॥
ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥
भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ *(पन्ना ११९४)*

भाई गुरदास जी लिखते हैं :

घरि हरणाखस दैत दे
कलरि कवलु भगतु प्रहिलादु ।. . .
जल अगनी विचि घतिआ
जलै न डुबै गुर परसादि ।
कढि खड़गु सदि पुछिआ
कउणु सु तेरा है उसतादु ।
थंम्हु पाड़ि परगटिआ नरसिंघ
रूप अनूप अनादि ।
बेमुख पकड़ि पछाड़िअनु
संत सहाई आदि जुगादि । *(वार १०:२)*

इस तरह होली का आधार बहुत पवित्र माना जाता है। होली का त्योहार असत्य पर सत्य की जीत तथा बुराई पर नेकी की विजय का प्रतीक माना जाता है। होलिका-दहन वाले दिन मानो सब बुराइयों को आग में जला दिया जाता है। गुरबाणी में इस कथा के माधयम से यह दृढ़ करवाया गया है कि परमात्मा सदैव अपने भक्त की रक्षा करता है। इस विश्वास को ही जीवन का आधार बनाना चाहिए :

— हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ
पैज रखदा आइआ राम राजे ॥
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ
प्रहलादु तराइआ ॥ *(पन्ना ४५१)*
— भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ
धुरि तू रखदा आइआ ॥
प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ
हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ *(पन्ना ६३७)*

शनैः-शनैः इस त्यौहार का रूप बदलने लगा। गुलाल आदि रंगों की जगह हानिप्रद रंग तथा गंदगी का प्रयोग किया जाने लगा। शराब आदि नशों का सेवन कर दुर्व्यहार तथा दुराचार यत्र-तत्र दिखाई देने लगा। प्रेम का स्थान वैर-विरोध ने ले लिया।

गुरु साहिबान के अनुसार होली का गुलाल रंग शरीर को रंगता है जो थोड़ी देर के लिये रहता है। मन को इस रंग से आत्मिक आनन्द का स्पृश प्राप्त नहीं होता। क्यों न ऐसी होली खेली जाये जिसका आनन्दमयी रंग-गुलाल हमेशा चढ़ा रहे। यह रंग परमात्मा के प्रेम का गाढ़ा रंग ही हो सकता है, जो कभी नहीं उतरता :

राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ *(पन्ना १९४)*

जो मन परमात्मा के प्रेम-रंग में रंग जाता है, उस पर माया का अन्य कोई रंग असर नहीं कर सकता। माया का रंग कुसुम्भ के फूल जैसा कच्चा होता है, जल्दी ही उतर जाता है, लेकिन परमात्मा के प्रेम का रंग मजीठ के रंग के सम्मान पक्का होता है, जो कभी नहीं उतरता।

संत-जनों की संगति से प्रभु का प्रेम-रंग प्राप्त किया जा सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी समझा रहे हैं कि संत-जनों की सेवा को मैंने होली बनाया है। संत-जनों की सेवा करने से मेरे अन्दर परमात्मा के प्रेम का गाढ़ा रंग चढ़ गया है :

आजु हमारै बने फाग ॥

प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥
रंगु लागा अति लाल देव ॥. . .
जिसहि परापति साधसंगु ॥
तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ (पन्ना ११८०)

जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सतसंग प्राप्त होता है। जैसे-जैसे वह सतसंग में बैठता है, वैसे-वैसे ही परमात्मा का नाम जपता है :

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ
तिउ तिउ हरि सिउ रंगु। (पन्ना ७१)

साधसंगति में बैठने से मन पवित्र हो जाता है। काम, क्रोध, अहंकार, मोह तथा ईर्ष्या इन सारे विकारों को मानों जुए की बाजी में खेलकर हार जाता है तथा सत्य, संतोष, दया, धर्म आदि गुणों को अपने हृदय-घर में ले आता है :

काम क्रोध माइआ मद मतसर
ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु
इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ (पन्ना ३७९)

साधसंगति में रहकर गुरु के साथ प्रेम हो जाता है। यह प्रेम मजीठ के रंग जैसा पक्का होता है। मजीठ के रंग में रंगे कपड़े चाहे फट जायें, मगर रंग नहीं उतरता। इसी तरह चाहे शरीर रूपी कपड़ा नष्ट हो जाए, मगर नाम का रंग नहीं उतरता :

सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी
जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥
काइआ कापरु चीर बहु फारे
हरि रंगु न लहै सभागा ॥
हरि चार्हिओ रंगु मिलै गुरु सोभा
हरि रंगि चलूलै रांगा ॥ (पन्ना ९८५)

संतों का रंग सौभाग्य से मिलता है,क्योंकि सच्चा संत कोई विरला ही है :

तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ (पन्ना ११२३)

वास्तविक संत की पहचान करने के लिए तथा जगह-जगह पर बनावटी संतों के फैलाये जाल से बचने के लिए 'संत' या 'साधु' शब्द का प्रयोग किस महान, विशेष व्यक्ति के लिए किया गया है, यह जान लेना जरूरी है। संतों का जीवन पवित्र तथा आत्मिक स्थिरता से युक्त होता है। परमात्मा के नाम का रस ही संतों के लिए आनन्ददायक होता है। दुनिया के विषय-भोगों के स्वाद का रस उनके लिये निरर्थक हो जाता है। परमात्मा के नाम-रंग में रंगकर उनका मन संतुष्ट तथा तृप्त रहता है :

संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ॥
(पन्ना ८१३)

जैसे पपीहा स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूंद पीकर तथा मछली पानी के साथ रहकर भी जीवित रहती है, वैसे ही संत-जन परमात्मा के नाम-जल की बूंद पीकर ही सुखी रहते हैं। वास्तविक संत वही है जो प्रभु को अच्छा लगता है। परमात्मा संतों के संग दिन-रात रहता है :

सोई संत जि भावै राम ॥
संत गोबिंद कै एकै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥
संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥
संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ (पन्ना ८६७)

श्री गुरु अरजन देव जी ने 'सलोक सहसक्रिती' में पूर्ण पुरुष या संत के छः लक्षण

बताये हैं। संत वो है जो सदैव प्रभु के नाम का सिमरन करता है, सुख-दुख को एक समान समझता है, जीवों पर दया करता हुआ काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार से बचकर रहता है, दुश्मन या मित्र हो, सबके चरणों की धूल बनकर रहता है तथा कभी किसी की निंदा नहीं सुनता। वह परमात्मा के कीर्तन को ही भोजन समझता है, माया से निर्लिप्त रहता है। प्रभु की अपार कृपा से नाम-रंग प्राप्त होता है। नाम रूपी आत्मिक रंग के साथ ही शारीरिक शक्ति के विकास के लिये तथा शूद्र कहलाये जाने वाले नीच जाति के लोगों के मन से हीन भावना को दूर करने के लिये श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६८० ई. में 'होली' के स्थान पर 'होला-महल्ला' का शुभांरभ किया। 'होला' अरबी भाषा का शब्द है तथा 'महल्ला' फारसी का। 'होला' का अर्थ है— 'हमला'। 'होला' 'हूल' से बना भी कहा जाता है। 'हूल' का अर्थ है— 'नोक'। कल्याणकारी कार्य के लिये संघर्षरत रहना तलवार की धार पर चलने के समान है। *(पुरख भगवंत कृत प्रिं. सतबीर सिंघ, पृष्ठ १०२)*

भाई साहिब भाई वीर सिंघ के अनुसार— 'महल्ला' का अर्थ है— हल्ला, 'बनावटी हल्ला'। *(कलगीधर चमत्कार)*

इस दिन बिना भेदभाव के अस्त्र-शस्त्र-निपुणता का प्रदर्शन किया जाता है। इसके अतिरिक्त घुड़दौड़, निशानेबाजी, गतका आदि का प्रदर्शन किया जाता है। भाई कान्ह सिंघ नाभा 'महान कोश' में लिखते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्र तथा युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिये यह रीति चलाई थी कि दो दल बनाकर प्रधान सिंघों की कमान में किसी नियत किए जाते विशेष स्थान पर कब्जा करने के लिये हमला करना था। कलगीधर स्वयं इस काल्पनिक जंग का करतब देखते तथा दोनों दलों को शुभ शिक्षा देते थे। जो दल कामयाब होता था, उसे दरबार में सिरोपाउ देते थे। यह प्रदर्शन श्री अनंदपुर साहिब के विशेष किले 'होलगढ़' में किया जाता था।

कवि निहाल सिंघ ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है :

बरछा ढाल कटारा तेगा,
कड़छा देगा गोला है।
छका प्रसाद सजा दसतारा,
अरु करदोना टोला है।
सुभट सुचाला अरु लख बाहां,
कलगा सिंघ सुचोला है।
अपर मुछहिरा दाढ़ा जैसे,
तैसे बोला होला है।
(महान कोश कृत भाई कान्ह सिंघ नाभा, पृष्ठ २८३)

आज भी कई प्रसिद्ध गुरुद्वारों में 'महल्ला' की रीति है तथा आत्मिक रंग में रंगने के लिये कीर्तन दरबार सजाये जाते हैं। यदि यह रीति गाँव-शहर के सभी गुरुद्वारों में अपना ली जाये तो होली वाले दिन नशे के दुष्प्रभाव से होने वाले दुराचार को रोका जा सकता है और होला-महल्ला की ख्याति को बुलंदियों पर पहुंचाया जा सकता है।

पाउंटा साहिब का होला-महल्ला

*-स. भगवान सिंघ जौहल**

सरवंशदानी पिता, नीले के शाहसवार, संत-सिपाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नये नरोए समाज की सृजना करने के लिए एक नूतन विचारधारा दी। मानव समाज के दोनों अंगों— स्त्री और पुरुष के लिए गृहस्थी होने, परोपकारी होने और हर समय गरीबों एवं मज़लूमों की रक्षा के लिए अपना आप अर्पित करने के लिए अपने पैरोकारों को पाबंद किया। ऐसे कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए मानव का आरोग्य और बलवान होना भी बहुत ज़रूरी है। कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब और श्री पाउंटा साहिब के निवास के समय होला-महल्ला के अवसर पर अपने सिंघों के लिए कृत्रिम मुकाबले का आयोजन करते, ताकि खालसा फ़ौज रण-क्षेत्र में अपनाए जाते असली दांव-पेंचों, चालों, हरकतों को ध्यान में रख कर जंगी अभ्यास करे। हर जत्थे को अलग-अलग रंगों की वर्दी पहनाई जाती। हमले में घोड़े-हाथियों का प्रयोग भी किया जाता। पातशाह खुद भी मुकाबले में हिस्सा लेते। युद्ध में नगाड़े बजते, हथियारों के टकराव होते, जयकारे गूँजते। सतिगुरु खुद योद्धाओं को प्रोत्साहन देते। अंत में फतह की खुशियाँ मनाई जातीं। वास्तव में सरवंशदानी पिता ने हमें पशु वृत्ति से आज़ाद करवाया; होली को होला-महल्ला का नाम देकर मानवता को मनुष्योचित बल और आत्मिक शुद्धता के मंडलों का निवासी बनाया।

खालसा पंथ की सृजना के संकल्प को अपने ज़ेहन में लेकर समय की चुन्नौती के अनुसार साहित्य सृजित करना और कलात्मिक रुचियों की पूर्ति के लिए कलगीधर पातशाह ने अपनी नौजवान अवस्था के लगभग साढ़े चार वर्ष नाहन रियासत में यमुना नदी के किनारे स्थित पाउंटा साहिब की पवित्र धरती पर बिताए। गुरु साहिब ने इस पवित्र धरती पर अपने लाडले ५२ कवियों की साहित्य-रुचियों को लेकर कवि दरबारों को सजाया। इसी स्थान पर चंदन कवि की कविता से खुश होकर उसे मोहरें देकर सम्मानित किया। यमुना नदी के कलकल करते बहते पानी के साथ मौज-मस्तियां करते प्रकृति की सुहानी गोद में बैठ गुरु साहिब ने अनेक बाणियों का उच्चारण किया। शस्त्र और शास्त्र-विद्या के साथ कादर की कुदरत के सुंदर नज़ारों पर कुर्बान जाते हुए, अकाल पुरख वाहिगुरु के रहस्यों को भांपते हुए एक योग्य कला पारखी की भांति अपने सिंघों को सुंदर पगड़ियाँ सजाने और बेहतर साहित्यक रचनाओं के मुकाबले करवा कर इनाम दिए जाने लगे। देश के कोने-कोने से साहित्यकार विशेषत: कवि अपनी आत्मिक-रस भरपूर कविताएँ, जिनमें प्रेम-रस, वीर-रस, हासरस

**गांव : जौहल, डाकखाना : बोलीना दुआबा, जिला : जलंधर— १४४१०१, फोन : ९८१४३-२४०४०*

होता था, सुनाने के लिए पहुँचते थे। यहां पीर बुद्धू शाह साढौरा से अपने पुत्रों और मुरीदों सहित कलगीधर पातशाह के दर्शन हेतु पहुँचे थे। उन्होंने भंगाणी के युद्ध में अपने पुत्रों और मुरीदों सहित युद्ध-कला के कौशल दिखलाए। युद्ध में अपने पुत्रों और मुरीदों की शहादत के पश्चात् पीर जी ने कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से छोटी दसतार आौर केश सहित कंघा प्राप्त कर अपनी ख़ुशी का इज़हार किया।

श्री अनंदपुर साहिब की भांति पाउंटा साहिब में भी होला-महल्ला की रौनक देखने योग्य होती है। पाउंटा साहिब की धरती हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखंड, ख़ास कर दून और तराई क्षेत्र की सिक्ख संगत के लिए विशेष आकर्षण रखती है। लाखों की संख्या में गुरु नानक नाम-लेवा संगत होला-महल्ला के पवित्र अवसर पर इस पवित्र धरती को प्रणाम करती है। संगत काफ़िलों के रूप में गाँवों और शहरों से पाउंटा साहिब पहुँचती है। यह पर्व लगातार चार दिन चलता है। दीवान सजते हैं। इन दीवानों में कवि दरबार, कीर्तन दरबार, कथा दरबार में गुरु-घर के कीर्तनियों, कथावाचकों, कवियों, ढाडिओं, कवीशरों को लाखों की संख्या में संगत श्रद्धा की मूर्ति बन कर श्रवण करती है। इस पर्व के आखिरी और चौथे दिन हिमाचली एवं पहाड़ी लोग अपने रिवायती पहनावे में कलगीधर पातशाह को प्रणाम करने पहुँचते हैं। पर्व में जाने वाले सभी रास्ते संगत के काफ़िलों से भरे नज़र आते हैं।

यमुना नदी के किनारे बनी गुरुद्वारा पाउंटा साहिब की आलीशान संगमरमरी इमारत सिक्ख इतिहास को अपने अंदर समोए बैठी है। इस स्थान पर दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने परिवार सहित सुशोभित रहे। साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी का जन्म भी इसी स्थान पर हुआ। कालपी ऋषि को गुरु साहिब ने पालकी भेज कर अपने पास बुलाया, जो गुरु नानक साहिब के दसवें स्वरूप के दर्शन की इच्छा में व्याकुल बैठा था। गुरु-दर्शन करने के पश्चात् इसी स्थान पर कालपी ऋषि ने अपना शरीर रूपी चोला छोड़ा था।

गुरुद्वारा परिसर में गुरुद्वारा तप स्थान, गुरुद्वारा कवि दरबार, थड़ा कालपी ऋषि सुशोभित हैं। साहित्यकारों और इतिहास के अन्वेषियों के लिए एक अलग इमारत 'विद्या सर' है, जिसमें पुस्तकालय और सिक्ख अजायब घर स्थापित हैं। इसी इमारत के साथ जुड़ा हुआ है २७ आधुनिक सुविधाओं वाले कमरों का रिहायशी माता सुंदरी जी निवास। भाई जोगा सिंघ निवास में छः बड़े हाल कमरे हैं। इसके अलावा ७२ सुंदर कमरों की इमारत भी संगत को सुविधाएं प्रदान कर रही है।

पाउंटा साहिब वर्ष भर लाखों की संख्या में संगत पहुँचती है, परन्तु होला-महल्ला की रौनक अपने आप में खास होती है। चंडीगढ़ से १२० किलोमीटर दूर बसा यह शहर नाहन (हिमाचल), जगाधरी (हरियाणा) और देहरादून (उत्तराखंड) से सीधे मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। सिक्ख संगत के लिए होला-महल्ला का जोड़ मेला आत्मिक आनंद वाले अनुभव छोड़ जाता है।

अद्वितीय शहीद : भाई तारा सिंघ वाँ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

सन् १७१६ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर को तत्कालीन मुगल बादशाह फरुख्सियर के हुक्म पर दिल्ली में असह यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। बाबा जी की शहादत के बाद सिक्खों के लिए कठिनाइयों से भरा समय आरंभ हो गया। मुगल हुकूमत की ओर से सिक्खों के विरुद्ध योजनाबद्ध ढंग से दमन-चक्र चलाया गया। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में शांतिपूर्वक ढंग से खेती आदि कार्यों में लगे हुए सिक्खों पर भी अत्याचार किया जाने लगा। इन साधारण किरती सिक्खों ने भी योद्धा सिक्खों की भांति जबरदस्त संघर्ष की मिसाल पेश की। भाई तारा सिंघ वाँ की शहादत की गाथा भी कुछ ऐसी ही गाथा है।

भाई तारा सिंघ और उनका गाँव वाँ : अविभाजित पंजाब के लाहौर ज़िले की तहसील कसूर में दो पड़ोसी गाँव थे। एक गाँव का नाम था— 'डल' और दूसरे गाँव का नाम था—'वाँ'। ये दोनों गाँव इतने आस-पास हैं कि इन्हें ज्यादातर 'डल-वाँ' ही कह दिया जाता है। आजकल ये गाँव भारत-पाकिस्तान सीमा पर खालड़ा गाँव से ज़रा-सा आगे भारतीय क्षेत्र में स्थित हैं।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल में इस गाँव में तीन भ्राता— भाई माही, भाई जैता और भाई गुरदास रहा करते थे। इनमें से सबसे छोटे भाई गुरदास ने दशम पिता से अमृत छका और सिंघ सजकर भाई गुरदास सिंघ बन गये। भाई गुरदास सिंघ अपने समय के प्रसिद्ध योद्धा रहे हैं। इन्होंने गुरु साहिब के नेतृत्व में खालसा सेना में रहते हुए अनेक युद्ध लड़े। बाद में भाई जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में भी युद्धों में भाग लिया।

भाई गुरदास सिंघ के घर पांच पुत्र पैदा हुए। भाई तारा सिंघ इन पांच पुत्रों में सबसे बड़े थे। आपका जन्म संवत्: सन् १७०२ ई. में हुआ था।

बड़े होकर भाई तारा सिंघ ने भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका। सिक्खी के संस्कार तो आप में जन्म से ही कूट-कूट कर भरे थे। आप खेती करते और गाँव से होकर आने-जाने वाले सिक्खों व यात्रियों की सेवा करते।

भाई तारा सिंघ का घर जंड और करीर के पेड़ों से घिरा एक बहुत बड़ा बाड़ा था।

शांतिप्रिय किसान होने के बावजूद आप श्रेष्ठ और उच्च कोटि के योद्धा भी थे। आप बहुत अच्छे घुड़सवार, तीरंदाज और तेग के धनी थे।

भाई तारा सिंघ वाँ सदैव नीला या केसरी बाणा सजाते थे और शस्त्र धारण किया करते थे।

युद्ध की पृष्ठभूमि : साहिब राय की दादागिरी :

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

सन् १७२६ ई. में जकरिया खान लाहौर का सूबेदार बना तो नौशहरा परगना के चौधरी साहिब राय को चाव चढ़ गया और उसने खुलकर सिक्खों को सताना शुरू कर दिया।

इसी सिलसिले में साहिब राय के घोड़े-घोड़ियां गाँव भड़ाणा के भाई माली सिंघ और भाई गुरबखश सिंघ के खेतों में चरने के लिए छोड़ी जाने लगीं। सिक्खों ने ऐसा करने से रोका तो दुष्ट साहिब राय ने धमकाया कि अब तुम्हारे केशों के रस्से बनाकर ही घोड़े बाँधूंगा।

भाई माली सिंघ और भाई गुरबखश सिंघ ने नजदीकी गांव भूसे के भाई बघेल सिंघ और भाई अमर सिंघ के साथ मिलकर एक योजना बनाई। इन्होंने साहिब राय के घोड़े-घोड़ियां छीनी और गांव घरियाला के भाई लखमीर सिंघ के यहां पहुंचा दीं।

भाई लखमीर सिंघ घोड़े पटियाला ले आये और बाबा आला सिंघ के पास पहुंचा दिए। बाबा आला सिंघ ने बदले में जो रकम दी, उस रकम से भाई लखमीर सिंघ ने रसद ली और भाई तारा सिंघ वाँ के लंगर में लाकर भेंट कर दी।

मुगल लश्कर से जंग और शहादत : सिक्ख जानते थे कि इस घटना की जबरदस्त प्रतिक्रिया होगी, अत: आस-पास के सभी सिक्ख भाई तारा सिंघ वाँ के बाड़े में एकत्र हो गए।

साहिब राय ने पहले पट्टी शहर के हाकिम जाफर बेग से शिकायत की। जाफर बेग ने ५०० घुड़सवारों को लेकर भाई तारा सिंघ वाँ के बाड़े पर हमला कर दिया। बाड़े में उस समय लगभग सौ-सवा सौ सिक्ख थे। बाड़े के आसपास जबरदस्त झड़प हुई। जाफर बेग के लश्कर को ज़ोरदार मात मिली। कई मारे गए और बचे-खुचे वहां से भाग खड़े हुए।

इस हार की बात जब लाहौर पहुंची तो जकरिया खान आग-बबूला हो उठा। उसने अपने एक सिपहसालार मोमिन खान को बुलाया और २२०० सवारों का लश्कर देकर भेजा।

वैसाख, संवत् १७८३ बि. तद्नुसार अप्रैल-मई १७२६ ई. में भाई तारा सिंघ वाँ के बाड़े पर ज़बरदस्त जंग हुई। सिक्ख हमेशा की तरह बड़ी बहादुरी के साथ लड़े। मुगल लश्कर के कई सैनिक मारे गए।

भाई तारा सिंघ वाँ ने मोमिन खान को हाथी से गिरा कर ज़ख्मी कर दिया। भयभीत मोमिन खान वहां से भाग निकला। लश्कर बहुत बड़ा था और सिक्ख गिनती के थे। सभी सिक्ख जान हथेली पर रखकर लड़े।

युद्ध करते-करते अंतत: भाई तारा सिंघ वाँ और उनके सभी साथी शहीद हो गए।

भाई तारा सिंघ वाँ का शहीदी-स्थान वाँ गाँव में ही है। यह स्थान यहाँ खादिम गढ़ी के पास है। इस स्थान पर एक सुंदर गुरुधाम गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब सुशोभित है।

१८वीं शताब्दी की महान शख्सियत, महा सेनानायक : सरदार बघेल सिंघ

*-डॉ. मनजीत कौर**

शूरवीर योद्धा, महान शख्सियत, महा सेनानायक सरदार बघेल सिंघ, जिन्होंने दिल्ली के लाल किले पर खालसई निशान साहिब लहराने के साथ-साथ दिल्ली के ऐतिहासिक गुरुद्वारों के निर्माण का पुनीत कार्य भी किया, इनकी नेक नियति, दूरदर्शिता एवं बहादुरी से प्रभावित 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के रचयिता भाई रतन सिंघ(भंगू) के विचार इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं :

बघेल सिंघ उस हस्स कर कहयो।
मुलक लड़े बिन किन छड दयो।...
हम लरनो मरनो किन संगैं,
यह है हमरी नित खेल॥ ६७॥
पंथ मद्ध है गुर की शकति।
पंथ मद्ध जपि तपीए भगत।...९९॥

(पृष्ठ ५४३)

सरदार बघेल सिंघ का जन्म श्री अमृतसर जिले के झबाल नामक ग्राम के एक (धालीवाल) परिवार में १७२५ ई. में हुआ माना जाता है। इनकी गणना १८वीं शताब्दी के महान सिक्खों में की जाती है। सरदार बघेल सिंघ सिक्खों की बारह मिसलों में से करोड़ासिंघिआ मिसल के जत्थेदार थे। इस मिसल के मुखिया सरदार शाम सिंघ सन् १७३९ में नादिर शाह के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हो गए थे। इतिहासकारों के अनुसार सरदार शाम सिंघ के उपरांत इस मिसल की बागडोर स. करम सिंघ ने सम्भाली। उनके पश्चात् सरदार करोड़ा सिंघ ने सम्भाली। उनके नाम पर ही इस मिसल का नाम 'करोड़ासिंघिआ' विख्यात हुआ। सरदार करोड़ा सिंघ वीरतापूर्वक लड़ते हुए अहमद शाह अब्दाली के विरुद्ध हुई लड़ाई में शहादत पा गए। इस दौरान सरदार बघेल सिंघ की दूरदर्शिता, पंथक जज्बा अन्य मिसलदारों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, नीति-निपुणता आदि उच्च योग्यता के परिणामस्वरूप उन्हें सरदार करोड़ा सिंघ की शहीदी के उपरांत करोड़ासिंघिआ मिसल का जत्थेदार नियुक्त किया गया। इस सेवा को उन्होंने बाखूबी सम्भाला। वे सर्वाधिक शक्तिशाली जत्थेदार के रूप में उभर कर सामने आए और सदैव सिक्ख पंथ को प्राथमिकता देते हुए बड़ी वीरता, साहस एवं

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

दूरदर्शिता से कार्य करते रहे।

यह वो समय था जब मुगलिया हुकूमत सिक्खों की जान-माल की दुश्मन बनी हुई थी और इस कौम का नामोनिशान मिटाने पर तुली हुई थी। विशेष तौर पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद लगभग २०-२५ वर्ष तक जुल्मी हुकूमत के अमानवीय अत्याचारों का सिलसिला चलता रहा। बेशक मुगलिया हुकूमत को गरूर था कि उसने सिक्ख कौम को समूल खत्म कर दिया है, लेकिन किसी ने सच ही तो कहा है :

फानूस बनके जिसकी हिफाजत हवा करे।
वो शमा क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे!

जत्थेदारी का कार्यभार सम्भालते ही सरदार बघेल सिंघ ने कई स्थानों पर अपना दबदबा कायम कर लिया। इसके साथ ही जलंधर, अंबाला और हरियाणा के उत्तरी-पश्चिमी इलाके पर अपना अधिकार स्थापित किया तथा अपना हेडक्वार्टर छलौदी नामक स्थान पर बना कर पूरबी पंजाब, हरियाणा, उतर प्रदेश के कई नगरों पर अपना अधिपत्य स्थापित किया। मिसलदारों के आपसी सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण होने के परिणामस्वरूप अहमद शाह अब्दाली के पंजाब पर अधिकार जमाने के मंसूबों पर पानी फिरता रहा। दुश्मन को अपने देश से खदेड़ने के नेक इरादे से सरदार बघेल सिंघ ने ४०,००० सिंघों की सेना सहित यमुना पार की और सहारनपुर पर धावा बोला। इतिहासकारों के अनुसार २० फरवरी,१७६४ ई. को सिक्खों ने इस नगर पर अपना अधिकार जमा लिया।

जब अहमद शाह अब्दाली अपने नापाक इरादों से सियालकोट तथा पंजाब के अन्य इलाकों से सैकड़ों स्त्रियों को बंदी बनाकर काबुल की तरफ वापिस जा रहा था, तब जांबाज सरदार बघेल सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किआ ने उसकी फौज पर बहुत ही वीरतापूर्वक धावा बोला और समस्त औरतों को उसके चंगुल से छुड़वाने में सफलता प्राप्त की।

इसके उपरान्त सरदार बघेल सिंघ ने जलालाबाद पर हमला किया, जहां हाकिम सैयद मीर हसन खान था, जो कि बहुत ही जालिम एवं चरित्रहीन व्यक्ति था और जिसने ब्राह्मण परिवार की लड़की को जबरदस्ती अपने पास रखा हुआ था। सरदार बघेल सिंघ की बहादुरी के परिणामस्वरूप इस लड़ाई में मीर हसन खान मारा गया। सरदार बघेल सिंघ ने उस ब्राह्मण लड़की को 'खालसे की पुत्री' का सम्मान देकर सुरक्षित उसके माता-पिता के पास भिजवाया। यही नहीं, मीर हसन की मृत्यु के उपरान्त ऐसे दुष्ट दलालों को भी सिक्खों ने आड़े हाथों लिया, जो लालचवश

दूसरों की बेटियों को सरकारी अधिकारियों को सौंप देते थे। ऐसे पापियों को भी कड़ी सजा दी गई, ताकि दूसरे भी खबरदार रहें। ऐसे दुष्कृत्यों को अंजाम देने से पहले उनके अंदर सिक्खों का भय होना लाजमी था।

सरदार बघेल सिंघ ने जहां करोड़ासिंघिया मिसल के भौगोलिक क्षेत्र को बहुत विस्तृत किया, वहीं खालसई सिक्का भी चलाया।

सरदार बघेल सिंघ महान नीतिज्ञ भी थे। सरदार बघेल सिंघ उस अवसर की तलाश में थे जब दिल्ली पर कब्जा किया जा सके, जब मराठों ने पंजाब में घुसपैठ करनी चाही तो सरदार बघेल सिंघ ने उन्हें घेरा डाल कर उनको परास्त किया। १७८७ ई. में सभी मिसलों के सरदारों से विशेष शूरवीर जांबाज सिंघ भेजने को कहा। इस प्रकार दिल्ली पर पूरी तरह से कब्जा करने के इरादे से ४०,००० फौज के साथ पूरी तैयारी से मजनूं का टीला पहुंच कर मुगल मुहल्ले पर जोरदार आक्रमण किया। लोग भयभीत होकर वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। लाल किला सिक्खों के कब्जे में आ गया। मुगल बादशाह आलम, जो कि सरदार बघेल सिंघ की शक्ति को पहचान चुका था और उसे एहसास हो चुका था कि सरदार बघेल सिंघ से युद्ध करना उचित नहीं है, उसने सरदार बघेल सिंघ से टक्कर लेने की बजाय संधि करना बेहतर समझा। उसने अपने वजीर आजम गौहर को संधि करने के लिए भेजा। दोनों के बीच जो संधि हुई उसकी मुख्य बातों का जिक्र डॉ. रूप सिंघ द्वारा सम्पादित 'प्रमुख सिक्ख शखसीअतां' (पंजाबी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रकाशित) पुस्तक में प्रो. सवरनजीत सिंघ के लेख में इस प्रकार किया गया है :—

१. खालसे को तीन लाख रुपए हर्जाने के रूप में दिये जाएं।

२. शहर की कोतवाली को चुंगी वसूल करने का अधिकार दिया जाए।

३. जब तक गुरुद्वारों की सेवा संपूर्ण न हो जाये वे अपने साथ ४००० सवार रखेंगे।

इन सारी शर्तों को मुगल बादशाह ने स्वीकार कर लिया। इसके फलस्वरूप सरदार बघेल सिंघ का दिल्ली पर दबदबा कायम हो गया। फरवरी, १७८३ ई. में सरदार बघेल सिंघ ने अलीगढ़, टुंडला, हाथरस, खुर्जा, शिकोहाबाद, फरूखाबाद आदि नगरों पर धावा बोल दिया। सरदार बघेल सिंघ ने एकत्र धन में से एक लाख रुपए श्री हरिमंदर साहिब की इमारत के पुनर्निर्माण हेतु श्री अमृतसर भेज दिया, क्योंकि इस पावन स्थान को अहमद शाह अब्दाली ने बड़े घल्लूघारे के दौरान तोपों द्वारा नष्ट करने का दुष्कर्म किया था।

८ मार्च, १७८३ ई. को सरदार बघेल सिंघ

ने बड़ी हिम्मत से बड़ी संख्या में सिक्ख फौज लेकर दिल्ली में प्रवेश किया। इस बार सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया आदि सिक्ख सरदारों के साथ खालसा फौज ने अत्यधिक वीरतापूर्वक अनेक इलाकों पर अधिपत्य जमाते हुए लाल किले पर चढ़ाई कर दी और अपनी विजयी फौज के साथ ४ मार्च, १७८३ ई. को लाल किले के अंदर प्रवेश किया। लाल किले के मुख्य द्वार पर केसरी निशान साहिब झुला दिया। दीवान-ए-आम में दरबार लगाकर इतिहासकारों के अनुसार खालसा दल के सबसे बुजुर्ग सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान' घोषित किया गया। जिनके साथ दिल्ली पर फतह हासिल की थी, उन पांच सरदारों को भी साथ बिठाया गया।

इस दौरान शाह आलम ने अपने वकील तथा बेगम समरू द्वारा सिक्ख सरदारों से समझौते की बात चलाई। बेगम समरू ने सरदार बघेल सिंघ को अपना भाई बनाकर दो मांगें मानने की अपील की। ये मांगें थीं :—

१. शाह आलम की जिंदगी को कोई नुकसान न पहुंचाया जाए।

२. लाल किले पर शाह आलम का अधिकार बना रहने दिया जाए।

महान जरनैल एवं नीति-निपुण सरदार बघेल सिंघ ने इन दो मांगों के एवज़ में बड़ी सूझबूझ से शाह आलम के समक्ष चार शर्तें रख दीं। ये शर्तें थीं :—

१. दिल्ली के वे समस्त स्थान, जिनका सम्बंध गुरु साहिबान के साथ है, खालसा पंथ को सौंप दिए जाएं।

२. समस्त स्थानों की निशानदेही हो जाने के उपरान्त खालसा पंथ को अपने गुरु साहिबान की यादगारें स्थापित करने में किसी तरह का व्यवधान न खड़ा किया जाए।

३. शहर की कोतवाली खालसा के सुपुर्द की जाए और दिल्ली में माल से एकत्रित होने वाली चुंगी में से एक रुपए में से ६ आने के हिसाब से सिक्खों को पैसा दिया जाए। यह रकम गुरुद्वारों के निर्माण हेतु खर्च की जाए।

४. दिल्ली के गुरुद्वारों के निर्माण-कार्य से लेकर उनके स्थापित हो जाने तक ४००० सिक्ख सैनिक दिल्ली में रहेंगे। इनका खर्च शाही खज़ाने में से किया जाए।

मुगल बादशाह से संधि के उपरान्त सरदार बघेल सिंघ ने दिल्ली में अत्यन्त समर्पित सेवा-भाव से ऐतिहासिक गुरु-स्थानों को स्थापित करने हेतु अथक प्रयास किया। सर्वप्रथम माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी के दिल्ली प्रवास के स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण आरंभ करवाया गया। साथ ही अष्टम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के ज्योति-जोत समाने के स्थान पर भव्य गुरुद्वारा साहिब का

निर्माण करवाया गया। गुरुद्वारा बंगला साहिब, गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, गुरुद्वारा सीसगंज साहिब नामक स्थान की खोज हेतु सरदार बघेल सिंघ को काफी मशक्कत करनी पड़ी। इतिहासकार इस संदर्भ में लिखते हैं कि गुरुद्वारा सीसगंज साहिब नामक स्थान किसी के कब्जे में था। इस पावन स्थान को पाने हेतु एक छोटी-सी सैनिक मुठभेड़ भी करनी पड़ी।

उपरोक्त महान सेवा-कार्य सम्पन्न करवा कर सरदार बघेल सिंघ जब दिल्ली से वापिस आने लगे तब मुगल बादशाह शाह आलम ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। इस महान स्वाभिमानी योद्धा ने बादशाह के समक्ष पेश होने से इनकार कर दिया। पुनः शाह आलम ने संदेश भिजवाया कि आप जिस तरह भी आना चाहें, आ जाएं। तब सरदार बघेल सिंघ शाह आलम के पास गए, लेकिन बिना शीश झुकाए, शस्त्र सहित, हाथी पर सवार होकर। जब वहां पहुंचे तो गर्ज कर फतहि बुलाई। सामने से बादशाह ने जवाब में सबको उसी तरह फतहि बुलाने को कहा। बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ के सम्मान में उन्हें एक हाथी, सोने की जंजीर, पांच घोड़े तथा अन्य बहुत-से तोहफे देकर विदा किया। बादशाह सरदार बघेल सिंघ की महान शख्सियत से बहुत प्रभावित हुआ।

सरदार बघेल सिंघ ने जीवन भर श्रेष्ठ एवं नेक करनी द्वारा सिक्खों को आदर्श नेतृत्व प्रदान किया। उनके द्वारा किये महानतम् कार्यों में से गुरु-घरों का निर्माण तथा दिल्ली फतह करने की घटना सिक्ख इतिहास में विलक्षण है एवं स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है।

सरदार बघेल सिंघ १८०२ ई. में अकाल चलाणा कर गए। उनकी पावन स्मृति में गुरुद्वारा बंगला साहिब नई दिल्ली में बाबा बघेल सिंघ अजायब घर स्थापित है। हजारों की तादाद में देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु इस अजायब घर द्वारा सिक्ख इतिहास के दर्शन करते हैं। इनका स्मृति-स्थल हरियाणा में भी स्थित है। ऐसे महान सेनानायक, शूरवीर योद्धा, गुरुधामों की सेवा-संभाल करने वाले, सिक्खी के प्रचार में अपना महान योगदान देने वाले महानायक को शत्-शत् नमन्!

स्वतंत्रता का सितारा : सरदार भगत सिंघ शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख समुदाय से संबंधित अनेक शूरवीर, निडर, बहादुर स्त्रियों, पुरुषों, बालकों ने जहां धर्म, न्याय, सच, मानवीय, गौरव के लिए शहादत दी है, वहीं इस देश को गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त करवाने हेतु भी कुर्बानियां दी हैं। भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता दिलाने हेतु सरदार करतार सिंघ सराभा, सरदार ऊधम सिंघ, सरदार बचन सिंघ लोहाखेड़ा, सरदार साधू सिंघ सांधड़ा, सरदार रतन सिंघ रक्कड़, ज्ञानी हरबंस सिंघ सरहाला और शहीदे-आजम सरदार भगत सिंघ सहित अनेक अकाली बब्बरों तथा गदरी देश-भक्तों ने जो लासानी शहादत दी है, उसे हम कभी भुला नहीं सकते। सरदार भगत सिंघ तो हमारी स्वतंत्रता का एक जगमगाता सितारा हैं।

सरदार भगत सिंघ का पैतृक गांव खटकड़ कलां, ज़िला शहीद भगत सिंघ नगर (नवांशहर) में स्थित है। उनके चाचा सरदार अजीत सिंघ क्रांतिकारी व समाज को सुधारने एवं दिशा देने वाले थे। उन्होंने सन् १९०६ में बार क्षेत्र के किसानों के आंदोलन की आगवानी की थी। फिरंगी सरकार द्वारा ९ मई, १९०७ ई. को उन्हें तथा लाला लाजपत राय को गिरफ्तार कर मांडला जेल भेज दिया गया। यह किसान आंदोलन इतिहास में 'पगड़ी संभाल जट्टा' लहर नाम से प्रसिद्ध है। सरदार भगत सिंघ के पिता सरदार किशन सिंघ भी देश-भक्त थे। उन्होंने अपने छोटे भाई की गिरफ्तारी के बाद क्रांतिकारी गतिविधियों को और तेज कर दिया। उनके विरुद्ध भी गिरफ्तारी वारंट जारी हो गया। सरदार किशन सिंघ बचकर नेपाल चले गए। नेपाल के राजा ने उनका शाही स्वागत किया। फिरंगी सरकार द्वारा जबरदस्त दबाव बनाए जाने पर राजा ने सरदार किशन सिंघ को अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया। उनके एक अन्य भाई सरदार सवरण सिंघ को भी गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया गया। उनका पूरा परिवार देश-भक्त एवं क्रांतिकारी परिवार था।

इसके बाद सरदार भगत सिंघ की माता विद्यावती पाकिस्तान के जिला लायलपुर के गांव चक्क नंबर १०५ चली गईं। यहीं पर सन् १९०७ ई. में २७ सितंबर को सरदार भगत सिंघ का जन्म हुआ। उनके जन्म के कुछ दिनों बाद ही पिता सरदार किशन सिंघ तथा दोनों चाचा रिहा होकर घर चले आए। सभी ने नवशिशु को 'भाग्यवान' कहा और दादी ने खुश होकर इनका नाम 'भगत सिंघ' रख दिया।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

बचपन में स्कूल जाने की उम्र में सरदार भगत सिंघ अपने दादा सरदार अरजन सिंघ के पास गांव खटकड़ कलां आ गए। यहां से कुछ दूरी पर स्थित बंगा कसबे के एक स्कूल में उन्हें दाखिल करवा दिया गया। सन् १९१४-१५ में कनाडा से आकर ग़दरी बाबाओं ने सरकार के विरुद्ध क्रांति करने की कोशिश की, जो कि असफल सिद्ध हुई। इससे पहले कामागाटामारू जहाज़ का साका भी हो चुका था। ये सब बातें सरदार भगत सिंघ ने सुनीं। वे बचपन से ही सरदार करतार सिंघ सराभा को अपना गुरु मानते थे। सरदार भगत सिंघ उनके इतने बड़े प्रशंसक थे कि उन्होंने ज़िंदगी भर सरदार सराभा की तसवीर अपने पास रखी। सरदार करतार सिंघ सराभा को १६ नवंबर, १९१५ ई. को लाहौर की सेंट्रल जेल में फांसी दे दी गई।

इस घटना का असर सरदार भगत सिंघ के मन पर बहुत गहरा हुआ। सरदार भगत सिंघ का परिवार गाँव छोड़ लाहौर आ गया। यहाँ पर सरदार भगत सिंघ ने आगे की पढ़ाई जारी रखी। जब लाहौर में नेशनल कॉलेज खुला, तब उन्होंने डी.ए.वी.कॉलेज छोड़ इस नए कॉलेज में दाखिला ले लिया। इस कॉलेज के प्रिंसिपल लाला छबील दास विद्यार्थियों में देश-भक्ति तथा प्रगतिवाद रुचियां जागृत करने का काम किया करते थे। इस कॉलेज ने उस समय कई देश-भक्त तैयार किए।

सन् १९२३ ई. में सरदार भगत सिंघ ने स्नातक (बी.ए.) उत्तीर्ण कर ली। एक तरफ अकाली लहर जोर पकड़ रही थी, दूसरी तरफ शांति-मार्ग त्याग कर बब्बर अकाली 'खून का बदला खून' लेने हेतु मैदान में उतर चुके थे। उनकी कुर्बानियों ने भी सरदार भगत सिंघ को काफी प्रभावित किया। उन्होंने अपनी प्यारी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए कुछ करने का निर्णय कर लिया। इन दिनों उनके माता-पिता ने उनका विवाह करना चाहा। उन्होंने मना कर दिया। फिर वे घर से चले गये और कानपुर(उ.प्र.) में हिंदी अखबार 'प्रताप' में एक पत्रकार के रूप में कार्य शुरू कर दिया। इस अखबार को एक अन्य क्रांतिकारी देशभक्त श्री गणेश शंकर विद्यार्थी चलाता था। इसकी संगत में सरदार भगत सिंघ पर देशभक्ति का रंग और अधिक गहरा हो गया। कानपुर में उन्होंने अपना नाम 'बलवंत' रख लिया था। यहीं पर ही सरदार भगत सिंघ की श्रीदत्त से भेंट हुई। बाद में दोनों अति घनिष्ठ मित्र बन गए। सरदार भगत सिंघ जैसे जोशीले नौजवानों ने भारत को स्वतंत्र करवाने हेतु इंकलाब भरा रास्ता चुना। उन्हें एहसास हो चुका था कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। इन जोशीले युवकों ने 'हिंदुस्तान रिपब्लिक आर्मी', 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन', 'नौजवान भारत सभा' नामक प्रगतिवादी एवं क्रांतिकारी संगठन बनाए। सरदार भगत सिंघ इन सभी संगठनों का मुखिया थे। सरदार भगत सिंघ कुछ वर्ष पहले १९१७-१८ ई. में रूस में हुई सफल क्रांति से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने वहां के सोशलिस्ट व कम्युनिस्ट साहित्य का भी

काफी अध्ययन किया था। उन्हें सोशलिस्ट एवं क्रांतिकारी विचारधारा से विशेष लगाव था।

हथियार खरीदने के लिए धन की जरूरत थी। उत्तर प्रदेश काकोरी नामक स्थान पर रेलगाड़ी रोक कर सरकारी खजाना लूटा गया। इस केस में चार क्रांतिकारियों को फांसी की सज़ा हुई। इनमें राजेंद्र नाथ लाहिड़ी को छोड़ कर अशफाक उल्ला खान, राम प्रसाद बिस्मिल और रोशन सिंघ शाहजहांपुर शामिल थे। रोशन सिंघ इस ट्रेन-डकैती में शामिल नहीं था। उसे बमरौली डकैती के अंतर्गत फांसी हुई। काकोरी कांड ९अगस्त, सन् १९२५ ई. को हुआ था। इन सबको फांसी लगने से पूर्व सरदार भगत सिंघ ने सुखदेव तथा भगवती चरण वर्मा से मिलकर उन्हें छुड़ाने की कोशिश भी की, किंतु सफलता हाथ न लगी। फिर अक्तूबर, १९२७ ई. में कानपुर में एक बम-कांड हुआ। इस केस में पुलिस ने सरदार भगत सिंघ को गिरफ्तार कर लिया, मगर वे दोषी सिद्ध न हुए और उन्हें रिहा कर दिया गया।

१९२७ ई. में 'नौजवान भारत सभा' अति सरगर्म हो गई। लाला किदार नाथ सहगल, सरदार सोहन सिंघ जोश, सरदार अरजन सिंघ गड़गज्ज और सरदार भगत सिंघ इसके मुख्य सरगर्म सदस्य थे। सरदार भगत सिंघ तब बीस वर्ष के भरपूर युवा थे। उन्होंने एक मैजिक लालटेन ली और इसके माध्यम से वे लोगों को जगह-जगह शहीदों की तसवीरें दिखाते तथा उन्हें देश की खातिर कुछ करने हेतु प्रेरित करने का काम करते। उनकी गतिविधियां पंजाब व उत्तर प्रदेश प्रांतों में जारी थीं। उत्तर प्रदेश में विजय कुमार सिन्हा और पंजाब में सुखदेव व भगवती चरण वर्मा उनके निकटस्थ साथी थे।

अंग्रेज सरकार ने तथाकथित संवैधानिक सुधारों के नाम पर 'साईमन कमिशन' स्थापित किया। इसकी आड़ में भारतीयों के अधिकारों को और अधिक कुचला जाना था। स्वतंत्रता-सेनानियों, देशभक्तों और क्रांतिकारियों ने इसका विरोध करने का फैसला किया। यह कमिशन ३० अक्तूबर,१९२८ ई. को लाहौर पहुंचा। सरकार ने कमिशन के विरुद्ध प्रदर्शन रोकने हेतु धारा १४४ लागू कर दी। लोगों ने लाला लाजपत राय के नेतृत्व में सरकारी पांबदियों को दरकिनार कर जुलूस निकाला। इस समय सरदार भगत सिंघ भी लाला लाजपत राय के साथ थे। एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी सांडरस ने स्वयं लाठी पकड़ देश-भक्तों की पिटाई की। लाला लाजपत राय इसी की लाठी की मार से गंभीर रूप से घायल हुए थे और कुछ दिन बाद उनका देहांत हो गया था। सरदार भगत सिंघ ने लाला जी की शहादत का बदला लेने की ठान ली।

इस लाठीचार्ज के बाद सरदार भगत सिंघ और उनके साथियों ने सांडरस को मारने का फैसला कर लिया। इस काम के लिए सरदार भगत सिंघ, चंद्रशेखर आजाद तथा राजगुरु तैयार हुए। भरे पिस्टल लिए तीनों पुलिस कार्यालय के निकट पहुंच गए। मोटरसाइकिल पर सांडरस को चढ़ा आते देखकर राजगुरु ने उसको पहली गोली मारी। दूसरी गोली सरदार भगत सिंघ ने दागी।

सांडरस की मौत हो गई। सांडरस का रीडर चंनण सिंघ क्रांतिकारियों को पकड़ने हेतु उनके पीछे भागा। मज़बूरी में सरदार भगत सिंघ को उसे भी गोली मारनी पड़ी। पुलिस को सरदार भगत सिंघ पर पूरा शक था। पूरी सरगर्मी के साथ उनकी तलाश होने लगी।

गुप्तवास के दौरान सरदार भगत सिंघ ने अपने केश कटवा लिए। फिर उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने पुन: केश रख लिए।

सरदार भगत सिंघ लाहौर से दिल्ली पहुंच गये। सरदार भगत सिंघ क्रांतिकारियों के विचार पूरी दुनीया तक पहुंचाना चाहते थे और बहरी ब्रिटिश सरकार के कान खोलना चाहते थे। साईमन कमिशन को बम से उड़ाने की अपेक्षा दिल्ली में असेंबली में बम फेंकने का निर्णय लिया गया। ऐसे बम तैयार किए गए जो फटने पर आवाज़ ज्यादा पैदा करें तथा किसी की जानी क्षति न करें। सरदार भगत सिंघ और बी.के.दत्त असेंबली हॉल में पहुंच गए। उन्होंने वहां बम फेंके और फिर 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाने शुरू किए। असेंबली हॉल में अफरा-तफरी फैल गई। सरदार भगत सिंघ ने अंग्रेजी में टाईप किए कुछ दस्तावेज वहां फेंके और पिस्तौल से हवा में कुछ गोलियां चलाईं। वे बम फेंक कर आसानी से वहां से भाग सकते थे, परंतु वे स्थिर व निडर खड़े रहे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। पूरी दुनिया में भारत के जांबाज, शूरवीर क्रांतिकारियों के नाम का डंका बज उठा। वे 'इंकलाब जिंदाबाद', 'ब्रिटिश साम्राज्य मुर्दाबाद' के नारे बुलंद करते हुए जेल चले गए। वहां फेंके हुए दस्तावेज़ों में लिखा हुआ था कि यह घटना किसी की जान लेने के लिए नहीं बल्कि शासकों के बंद कान खोलने के लिए की गई है।

सरदार भगत सिंघ तथा बी.के.दत्त ने दिल्ली जेल में निकृष्ट व्यवहार व पाबंदियों के विरुद्ध १५ दिन लगातार भूख-हड़ताल की। बाद में सरदार भगत सिंघ को मियांवाली जेल और दत्त को लाहौर की सेंट्रल जेल भेज दिया गया। १० जुलाई, १९२९ ई. को लाहौर साजिश केस की सुनवाई शुरू हुई। सरदार भगत सिंघ को लाहौर लाया गया। जो भूख-हड़ताल की थी, वह अभी भी जारी थी। इनके साथ अन्य कैदी क्रांतिकारियों ने भी भूख-हड़ताल की। श्री जितेन्द्र नाथ दास ६२ दिन की भूख-हड़ताल के बाद शहीद हो गए। पूरे देश ने उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की।

७ अक्तूबर, १९२९ ई. को वाद का निर्णय हुआ। सरदार भगत सिंघ, राजगुरु, सुखदेव को फांसी की सज़ा सुना दी गई। सात अन्य क्रांतिकारियों को अंडेमान-निकोबार के काले पानी की सज़ा हुई। अनेक को लंबी अवधि की सज़ा हुई। २३ मार्च, १९३१ ई. को जब करांची में कांग्रेस दल का विशेष समागम हो रहा था, तब सरदार भगत सिंघ, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर लटका कर शहीद कर दिया गया। अमर बलिदानी सरदार भगत सिंघ की शहादत पीढ़ियों तक लोगों को प्रेरित करती रहेगी।

जपु जी साहिब : एक विश्लेषण

– डॉ. जसकिरन कौर*

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित बाणी जपु जी साहिब में मानव को सचिआर (सत्यवादी) बनने की प्रेरणा दी गई है। मानव-जीवन का उद्देश्य अपने मूल को पहचान कर उसमें लीन हो जाना है। अपने इस उद्देश्य के लिए गुरु साहिब ने ३८ पउड़ियों की बाणी उच्चारण की, जिसका आरंभ 'मूलमंत्र' के साथ किया। गुरु जी ने 'मूल मंत्र' के बाद सलोक देकर उसके पश्चात पहली पउड़ी आरंभ की। ३८ वीं पउड़ी के अंत में एक और सलोक दर्ज है। गुरु जी ने अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग के साथ उच्चतम रूप में पेश किया।

जपु जी साहिब बाणी की विशेषता इस बात में है कि साधारण आदमी को योद्धा का ऊँचा दर्जा दिया गया है। इस बाणी में साहित्यक रूप वार के विषय की तरह ही मानव की मानसिक स्थिति के संघर्ष को दर्शाया गया है :

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥

(पन्ना १)

गुरु जी ने मानव को निकृष्ट कार्य न करने की और मन को जीतने की सलाह दी है, क्योंकि तृष्णा के अधीन आया मानव अनेक पदार्थों से भी तृप्त नहीं होता। तीर्थों पर जाकर भी मानव का मन शुद्ध नहीं होता। एकांत में समाधियां लगा कर भी झूठ की दीवार नहीं टूटती।

मन में सत्य बसाने के लिए अहंकार का त्याग ज़रूरी है, क्योंकि हुक्म (आज्ञा)-पालन से ही अहंकार का त्याग हो सकता है। अहंकार हुक्म का विरोधी है। अहंकार-मुक्त व्यक्ति को ही कुदरत की शक्ति का ज्ञान प्राप्त होता है। अहंकार-ग्रस्त मानव अपने आप को उत्तम और श्रेष्ठ मानता है और दूसरे को घटिया एवं नीच समझ कर नफ़रत करता है, परन्तु जो मानव गुरु की कृपा से परमात्मा के हुक्म को जान लेता है, वह अहंकार-ग्रस्त बातें नहीं करता :

— नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥

(पन्ना १)

— अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥

(पन्ना २)

गुरु जी बताते हैं कि मन को तुच्छ वृत्तियों से बचा कर रखने वाला अर्थात् मन को जीतने वाला ही जग को जीत सकता है। उन्होंने मनुष्य को धर्म कमा कर पंच बनने की प्रेरणा दी है :

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥

*५७९, बी-१२, कामरान रोड, निकट गुरुद्वारा कलगीधर सिंघ सभा, लुधियाना-१४१००८, फोन: ८५६७९-०४४१६

पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ (पन्ना ३)

गुरु साहिब ने बताया है कि धर्म तो मानव-कल्याण के लिए जीवन-युक्ति होता है। चिह्नों या भेष की रस्मी क्रिया धर्म नहीं। योगियों को बताया है कि चित्त-वृति को अधीन कर प्रभु के साथ जुड़ना चाहिए। मुंदरां की जगह संतोष और भस्म लगाने की जगह अकाल पुरख की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहिए। शरीर को विकार-रहित रख कर प्रभु-पति के प्रति निश्चय रखने का उपदेश दिया गया है।

बाणी की पउड़ियों में मुख्य विचार का दोहराव किया गया है। इस दोहराव के माध्यम से गहरे विचार अर्थात् भाव को और ज्यादा प्रत्यक्ष करने का यत्न किया गया है। पहली सात पउड़ियां सचिआर के प्रति हैं, जिनमें झूठ (कूड़) के कारण मानव तथा परमात्मा के मध्य उत्पन्न दूरी दिखाई गई है और बाद में हुक्म में रह कर झूठ की पाल तोड़ने का यत्न किया गया है। इसके अलावा आठवीं से ग्यारहवीं पउड़ी और बारहवीं से पन्द्रहवीं पउड़ी में दोहराव किया गया है :

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ (पन्ना ३)

सोलहवीं से उन्नीसवीं पउड़ी तक भी ऐसे ही भाव प्रकट किये गए हैं :

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ (पन्ना ३)

गुरु साहिब ने बारह माहा, अलाहुणीआं, पटी, वारां आदि लोक-प्रचलित काव्य-शैलियों को अपना कर जितनी भी बाणी उच्चारण की है, उसमें उन्होंने विषय प्रकट करने का ढंग ही बदला है, क्योंकि उनका उद्देश्य यही है कि जिस काव्य-शैली से लोगों का मन परिचित होता है उसके माध्यम से आत्मिक और सदाचारक उपदेश दिए जाएँ। ऐसा करने से जहाँ लोक-रुचि प्रबल हो जाती है, वहीं आत्म-ज्ञान का मार्ग भी आसान हो जाता है।

जपु जी साहिब का उच्चारण ३७ पउड़ियों में किया गया है। पउड़ी में विचारों का निर्माण नीचे से ऊपर हो जाता है। इस बाणी में मानवीय मानसिकता का विकास मिलता है। मानव को कर्मकांडों से ऊपर उठ कर सत्य के पद तक पहुँचने की प्रेरणा दी गई है और सच्ची टकसाल में शबद की बनावट की बात कही गई है। जहाँ मनुष्य प्रभु की कृपा से निहाल हो जाता है, वहीं उसे निरंकार के सचखंड का ज्ञान हो जाता है।

बाणी जपु जी साहिब में नाम-मार्ग से तात्पर्य है— नाम जपना और सिमरना। जपने का अर्थ है— दोहराना। श्री गुरु नानक साहिब के अनुसार जपु का तात्पर्य केवल दोहराव नहीं है। गुरु साहिब जपु की क्रिया को उसी हालत में ठीक मानते हैं, अगर उच्चारण किए शबद को मन में बसाया जाये। इस अर्थ में नाम-जप से तात्पर्य नाम-सिमरन ही लिया गया है और इस ढंग से जो शबद मन में बसाया जाता है, वह ध्यान है। वह ध्यान परमात्मा की प्रकृति और उसके लक्षणों का

है, जिनका शबद के माध्यम से प्रकाश होता है। इस प्रकार परमात्मा की प्रकृति और उसके गुणों का ध्यान ही श्री गुरु नानक साहिब की धर्म-साधना का मूल है।

श्री गुरु नानक देव जी ने अनुसार गुरमुख सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परमात्मा के साथ अभेद हुआ व्यक्ति है। सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का तात्पर्य यह नहीं कि वह योगियों, सन्यासियों की भांति घर-बार त्याग कर जंगलों या पहाड़ों की गुफ़ाओं में निवास करता है। वह तो गृहस्थ-निर्वाह करता हुआ मोह-माया से निर्लिप्त रहता है। यह उसकी शख्सियत का विशेष गुण है। यह युक्ति उसने नाम-सिमरन और उसे मन में बसाने से सीखी है। नाम-सिमरन से नामी के हुक्म की पहचान होती है, उसके गुणों का पता चलता है। गुरमुख नामी के गुणों के अनुसार अपना जीवन ढालता है और अपने अहंकार को ईश्वरीय हुक्म में अभेद कर लेता है :

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥

(पन्ना १)

गुरमुख विवेक बुद्धि वाला व्यक्ति होता है। वह जानता है कि धन-यौवन और अन्य सांसारिक साधन उसे शाश्वत सुख नहीं दे सकते, इसलिए इन साधनों की प्राप्ति की भटकना में वह व्याकुल नहीं होता। वह इस संसार को धरमसाल समझता हुआ अपने मानव-कर्त्तव्यों को प्राथमिकता देता है, क्योंकि वह जानता है कि ये सत्य कर्म उसके लिए लोक-परलोक में सहायक बनते हैं :

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥

(पन्ना ७)

वह केवल आत्म-मुक्ति का अभिलाषी नहीं होता, बल्कि समूचे भाईचारे को भी इस दिशा में देखने का इच्छुक होता है, इसलिए वह दूसरों को अच्छे कर्म करने की भी शिक्षा देता है।

उपरोक्त विचारों के पश्चात् हम कह सकते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का आदर्श यह है कि मानव जहाँ ख़ुद दैवी गुण-सम्पन्न होता है, वहीं अपने भाईचारे को भी इन गुणों की पहचान कराने की विधि सिखाता है। वह एक ही समय में किरती (श्रमिक) भी होता है और भक्त भी, गृहस्थी भी होता है और आत्म-ज्ञानी भी। यह युक्ति उसने सहज जीवन-पद्धति के अनुसार अपने आप को ढाल कर सीखी है। हम यह बात विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आज का मानव, जिस भटकन, निराशा और दिशाहीनता वाली स्थिति में से गुज़र रहा है, उससे मुक्त होने के लिए यदि वह श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में पेश सहज जीवन-पद्धति के अनुसार अपने जीवन को ढालने का यत्न करे तो अवश्य ही वह अच्छा और सभ्य मानव बन सकता है।

जापु साहिब

*-डॉ. जसबीर सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जहाँ महान रूहानी अगुआ, वीर सेनापति और धुरंधर साहित्यकार थे, वहीं महान बाणीकार और संत-सिपाही भी थे। गुरु साहिब की एक बाणी 'जापु' साहिब है। इस बाणी में अकाल पुरख की महिमा निर्गुणवादी विशेषणों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। इस अनूठे ढंग की बाणी के माध्यम से परम सत्य के स्वरूप का गुणगान किया गया है। यह बाणी मानव मन को अकाल पुरख के चरणों में लीनता प्रदान करने का अवसर है। इस बाणी में १९९ बंद और १० वर्ग के कुल २२ छंद हैं। जैसे छपै, भुजंग प्रयात, चाचरी, रूआल, भगवती, हरिबोलमना, चरपट, मधुभार, रसावल और एक अछरी छंद इस्तेमाल किए गए हैं।

जापु साहिब में गुरु साहिब ने अकाल पुरख के नाम भी वीर योद्धाओं वाले चित्रित किए हैं, जैसे असिकेतु, असिधुज, असिपाण, ससत्रपाणि आदि। दसम पिता ने भक्ति का शक्ति के साथ मिलाप कर नया बिंब स्थापित किया।

दसम पिता ने अपने कई छंदों में प्रतीकात्मक और सकारात्मक शैलियों का प्रयोग कर स्वरूप-चित्रण उभारा है। परम सत्ता के स्वरूप-वर्णन में एक विशेषता यह देखी गई है कि गुरु साहिब ने पहले एक प्रतिष्ठित सत्ता अथवा शक्ति का वर्णन कर अपने इष्ट देव को उससे ऊपर या श्रेष्ठ घोषित किया है।[१]

हर शब्द शस्त्रधारी योद्धा है, जो नाम-सिमरन के साथ-साथ युद्ध-क्रिया में लीन है। उसकी गति वीरता वाली है, प्रभाव भी वीरता वाला है। अमानवता के विरुद्ध लड़ाई लड़ने वाले योद्धा का जाप है।[२]

हिमाचल प्रदेश के ज़िला सिरमौर (नाहन) में यमुना नदी के किनारे दसम पिता ने १६८५ ई. में शहर 'पाउंटा साहिब' की आधारशिला रखी थी। यह ज़मीन राजा मेदनी प्रकाश ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भेंट की थी। यहाँ गुरु साहिब कई वर्ष तक रहे। पाउंटा साहिब में गुरु साहिब से सम्बन्धित सात ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान हैं। 'कवि दरबार स्थान' वो जगह है जहाँ गुरु साहिब ५२ कवियों के साथ कवि दरबार सजाया करते थे। यहीं पर गुरु साहिब ने जापु साहिब, सवय्ये पातशाही दसवीं आदि बाणी उच्चारण की मानी जाती है।

जापु साहिब की भाषा मिश्रित है, जिसमें साधुक्कड़ी, पंजाबी, संस्कृत, अरबी और फ़ारसी मुख्य मानी जाती हैं। भाषाई-मिश्रण युक्ति पक्ष से यह बाणी अनुपम और विशेषण प्रधानता का स्वरूप पेश करती है। सर्वसांझी भाषा और शैली अनोखी एवं बेमिसाल है।[३] 'जापु' संस्कृत के शब्द 'जप' का मूल है, जिसके अर्थ हैं— धीमी आवाज़ में उच्चारण करना, अकाल पुरख के नाम का उच्चारण

**स्वर्ण कालोनी, त्रिलोकपुर रोड, गोले गुजराल, जम्मू तवी— १८०००२, फोन : ९९०६५-६६६०४*

करना। यह बाणी नित्तनेम की है। 'खंडे की पाहुल' के समय भी पाँच बाणियों में से एक है :

जपु, जाप, सवैये, चौपई, अनंद को, पाठ सों पाहुल तिआर करीजै।

पांचओ चुले मुख पावहि सु याजक एत ही नेतर केस पवीजै ॥११३ ॥४

डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) के अनुसार जापु साहिब भाषाई पवित्रता, सभ्य और सर्वसांझेपन का सुंदर उदाहरण है।[५] जापु साहिब संत-सिपाही को मैदान-ए-जंग के लिए उत्साहित और निर्देशित करती है। इसका उच्चारण-विधान गतके की चाल पर माना जाता है। तवारीख में ज़िक्र आता है कि पुरातन सिंघ इस बाणी का पाठ कमरकस्सा[६] कर करते थे। इस प्रकार तेग़ और माला का तेज़ रौशनी में प्रकट होता था।

भंगाणी के युद्ध में गुरु साहिब जो 'चार आइना' धातु का ज़राबकतर पहनते थे, उसकी पेटी पर गुरबाणी अंकित होती थी। चार आइना के दूसरे आइना पर 'जापु साहिब' का पहला छंद अंकित है, जो आज भी पटियाला घराने के पास मौजूद है। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) के शब्दों में, '' जापु साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरबाणी की परंपरा में निर्गुण, सर्वव्यापक ब्रह्म (प्रभु) की उपमा करते हुए युग की ज़रूरत के अनुसार उसमें जुझारू और मरि मकंदन शक्ति का भी आरोप किया है। इसके अलावा विरोधात्मक, सकारात्मक और निषेधात्मक शैली प्रयोगों के माध्यम से उसे उचित परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है तथा अनेक धर्मों में परम सत्ता के लिए प्रतिष्ठित नामों का इस्तेमाल कर इष्ट देव के स्वरूप को सर्वधर्मग्राही बनाया है। परम सत्ता का ऐसा स्वरूप चित्रित कर भावात्मक एकता कायम करने का यादगारी प्रयास किया है। इसके अलावा भक्ति और शक्ति का समन्वय कर नवसृजित खालसा भाईचारे को संत-सिपाही बनने की युक्ति समझायी गई है।[७]

सिक्ख इतिहास में ज़िक्र आता है कि गतका अखाड़ों में शुरू से यह परिपाटी रही है कि गतके के अभ्यास के समय 'जापु साहिब' का पाठ उच्च स्वर में किया जाता था। परंपरा इस बात की साक्षी है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा उच्चरित इस बाणी को गुरु साहिब प्रभात समय 'गतके दी भोगपुरा' नामक स्थान पर अपने सेनानियों को प्रशिक्षण देते थे। जापु साहिब का अभ्यास भी साथ-साथ करवाते थे। यह स्थान कीरतपुर साहिब और श्री अनंदपुर साहिब के मध्य कहीं स्थित रहा है। मिट्टी के दस फुट ऊँचे छोटे टीले के आस-पास समतल धरती पर गतका खेला जाता था। टीले पर बैठा सिंघ जाप साहिब का पाठ उच्च स्वर में किया करता था।

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के मुखारविंद से उच्चारित बाणी है, जो जापु साहिब, जो विषय-वस्तु, शैली, भाषा और छंद-विधान के कोण से अनुपम बाणी है।

संदर्भिका :

१. डॉ. अमृतपाल कौर, खोज पत्रिका, पृष्ठ ५२, सितंबर २०००, (पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला) पृष्ठ ५२३
२. पूर्व अंकित, पृष्ठ ५२७
३. डॉ. हरबंस सिंघ (संपादक), इन्साईक्लोपीडिया ऑफ सिक्खज़म
४. स. गुरमुख सिंघ (संपादक), भाई जैत राम: जीवन और रचना, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
५. डॉ. अमृतपाल कौर, पूर्व अंकित, पृष्ठ ५२८
६. पूर्व अंकित
७. पूर्व अंकित, पृष्ठ ५२९

आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

गुरमति में स्त्री को एक जीव से आगे जाकर भक्ति की सर्वश्रेष्ठ भावना के रूप में देखा गया है। कुछ ऐसे विशेष गुण हैं जो मात्र स्त्री में ही प्रकट होते हैं। ऐसे गुण भक्ति को सार्थक करते हैं और परमात्मा के मेल में सहायक होते हैं।

समाज में आदि काल से ही स्त्री को उसके सौन्दर्य व उसके पति के सन्दर्भ में जाना जाता था। उसका महत्व उसके रूप, रंग, कमनीयता से था। उसे आदर उसके पति के महत्व से प्राप्त होता था। समाज के लिये रूपवती नारी एक अप्सरा थी। महाराजा की पत्नी महारानी, सेठ की स्त्री स्वयं ही सेठानी बन जाती थी। सदियों से ऐसा ही चला आ रहा था। गुरमति ने पहली बार इस अवधारणा को तोड़ा। स्त्री को पहली बार उसका वह स्थान प्राप्त हुआ जिसकी वो अधिकारिणी थी :

नानक सोभावंतीआ सोहागणी
अनदिनु भगति करेइ ॥ (पन्ना३८)

श्री गुरु अमरदास जी ने उपरोक्त वचन में कहा कि स्त्री का सौन्दर्य उसकी भक्ति-भावना में है। उसका सुहागिन होना भी परमात्मा के साथ उसकी प्रीति में है। वो स्त्री आदर व सम्मान की अधिकारिणी है जो अपने पति अर्थात् परमात्मा को पहचानती है और उसके हर हुक्म को मानते हुए उसे सदा रिझाने का प्रयास करती है। गुरु साहिब ने स्त्री की उस छवि को तोड़ा जो सेज पर सांसारिक पति को अपनी रमणीयता से संतुष्ट करने पर पति की प्रिय बनने को थी। गुरु साहिब ने कहा कि जीवन की सेज पर प्रियतमा वो है जो परमात्मा के रंग में रंगी हुई है और परमात्मा की भक्ति द्वारा स्वयं को गुणों से भरपूर कर रही है। जो अपने सांसारिक पति को प्रेम-भावना से मोहित करना जानती है वह जब सच्चे पति-परमात्मा को पाना चाहती है तो सफल हो जाती है, क्योंकि उसे भावनाओं के चमत्कार का ज्ञान है। गुरु साहिबान ने प्रेम को परमात्मा की भक्ति का आधार बनाया और स्त्री की प्रेम-भावना को प्रेम के सर्वोत्कृष्ट रूप में सामने रखा। इस प्रेम में पूर्ण समर्पण भी था और सुख भी । स्त्री का यह गुण धर्म-जगत में प्रेरणा का स्रोत बन गया।

गुरु साहिबान की अनूठी दृष्टि ने स्त्री की प्रेम-भावना को ही नहीं, उसके पूरे जीवन को ही धर्म-कर्म के लिये प्रेरणादाई बना दिया।

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८०९*

एक स्त्री दो चरणों में जीवन जीती है। जीवन का पूर्वार्द्ध वह मायके में व्यतीत करती है। जीवन का उत्तरार्द्ध उसे ससुराल में बिताना होता है। मायके में वह अपने माता-पिता के लाड़-प्यार में जैसा चाहे जीवन जीने के लिये स्वतंत्र होती है। ससुराल में ऐसी स्वच्छंदता नहीं उपलब्ध होती। ससुराल में स्थिति परिवर्तित हो जाती है। ससुराल में उसकी एक निश्चित भूमिका भी होती है जो उसे उत्तरदायित्वों के बंधन में बांध देती है। कहने से तात्पर्य यह भी है कि नाबालिग अवस्था का बीत जाना तथा बालिग अवस्था का शुरू हो जाना अपने आप में जीवन का एक परिवर्तन है। बालिग आयु में विवाहोपरांत दो परिवारों के मध्य सामंजस्य बनाए रखने, नए-नए आयाम तय करने हेतु लिए जाने वाले निर्णयों के लिए सामर्थ्य का उत्पन्न होना भी जीवन का स्थिति-परिवर्तन स्वयं बन जाता है। गृहस्थ अवस्था में प्रविष्ट होकर सफलतापूर्वक पारिवारिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करना आरंभ कर देना नयी जीवन-दिशा का आगाज़ माना जाता है। गुणवती स्त्री मायके में रह कर ससुराल की तैयारी भली-भांति कर लेती है, ताकि उसे वहां उपहास, अपमान व दंड न भोगना पड़े। ससुराल में उससे क्या अपेक्षायें होंगी, उन पर खरा उतरने की योग्यता वह मायके में ही अर्जित कर लेती है। साधारणत: मायके में कम जवाबदेही होने के बावजूद भी वह पूर्ण जवाबदेह की तरह जीवन व्यतीत करना सीख जाती है। स्वच्छंदता होने के बावजूद वह अनुशासन भरा जीवन जीते हुए उसमें अभ्यस्त होना चाहती है ताकि ससुराल में उसका मान बना रहे। श्री गुरु रामदास साहिब ने स्त्री के इस जीवन-ढंग को सम्मान देते हुए इसे धर्म-जगत की प्रेरणाप्रद स्थिति के रूप में प्रतिपादित किया :

मुंध इआणी पेईअड़ै
किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥
हरि हरि अपनी किरपा करे
गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ॥
साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि
हरि हरि सदा धिआए ॥
सहीआ विचि फिरै सुहेली
हरि दरगह बाह लुडाए ॥ *(पन्ना ७८)*

जिस स्त्री पर परमात्मा की कृपा होती है वो अपने मायके में रहते हुए वो सारे कार्य सीखती है जो ससुराल में उसके काम आने वाले हैं और जिनसे उसे ससुराल में प्रतिष्ठा मिलने वाली है। माता-पिता विशेष ध्यान देकर उसे ऐसे कार्यों में दक्ष करते हैं, उसे शिष्टाचार, लोक-व्यवहार सिखाते हैं। संसार में रहते हुए मनुष्य को भी उसी भावना और सोच के अनुरूप स्वयं को गुणों से समृद्ध करना चाहिये जो परमात्मा के दरबार में काम आयें व उसे प्रतिष्ठा दिलायें। स्त्री के जीवन को परमात्मा-भक्ति व उससे मेल के आदर्श

रूप में देखना स्त्री को अपूर्व सम्मान देना था।

समाज में स्त्री की स्थिति आदि से ही दयनीय थी। पुरुष-सत्ता के अभ्यस्त समाज में स्त्री को एक पूरक के रूप में ही देखा जाता था। उससे अपेक्षायें अधिक थीं, किन्तु उसे देने के लिये समाज के पास कुछ अधिक नहीं था। आज भी स्थिति में अधिक अंतर नहीं है। सभी क्षेत्रों में समान सहभागिता के लिये उसे जूझना पड़ रहा है। सफल स्त्रियों के गिने-चुने उदाहरण अवश्य हैं, किन्तु वे आम स्त्री की स्थिति के प्रतीक नहीं माने जा सकते।

श्री गुरु रामदास साहिब ने विवाह का सन्दर्भ भी अपनी बाणी में लिया, क्योंकि विवाह-संस्कार जीवन-परिवर्तन की दिशा में पुरुष से अधिक स्त्री के लिये महत्वपूर्ण होता है। विवाह के बाद स्त्री को अपना घर त्यागना पड़ता है, नये घर, परिवार को अपनाना पड़ता है। जीव को इस स्थिति से प्रेरणा व सीख लेते हुए सोचना चाहिये कि समय आने पर उसका विवाह परमात्मा से होना है, जो अविनाशी है। उसे वरण करने का अर्थ है— विकारों, अज्ञान का त्याग करना और ज्ञान के प्रकाश को अंगीकार करना। जैसे स्त्री मायके में सद्गुणों में परिपक्व होती है वैसे ही जो जीव सांसारिक जीवन में परमात्मा की भक्ति करता है, वह परमात्मा के दरबार में खरा उतरता है, ससुराल में आदर पाने वाली स्त्री की तरह।

गुरबाणी में जहां स्त्री को भावना और व्यवहार दोनों ही तल पर एक आदर्श के रूप में स्थापित किया गया वहीं बेबे नानकी जी से लेकर माता सुंदरी जी तक बड़ी संख्या में स्त्री रूपी सिक्खों के ऐसे प्रचुर उदाहरण गुरु-काल में ही उभर कर सामने आये, जिन्होंने श्री गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित धर्म के अद्वितीय दर्शन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री गुरु नानक साहिब की आध्यात्मिकता बाल्यावस्था से ही प्रकट होने लगी थी, जिसके दर्शन सबसे पहले उनसे पांच वर्ष बड़ी उनकी बहन बेबे नानकी जी ने किये थे। सुलतानपुर लोधी एक ऐसा स्थान है जिसे श्री गुरु नानक साहिब के जीवन में ही नहीं सिक्ख पंथ में एक दूरगामी प्रभाव वाले मोड़ के रूप में देखा जाता है। श्री गुरु नानक साहिब के राय भोय की तलवंडी से सुलतानपुर लोधी आने का मुख्य कारण बेबे नानकी जी ही थे। सुलतानपुर लोधी से ही श्री गुरु नानक साहिब की मानव-कल्याण हेतु धर्म प्रचार- यात्राओं का आरंभ हुआ था जिसने पूरे संसार के धार्मिक परिदृश्य को आमूल बदल दिया था। बेबे नानकी जी थे, इसलिये श्री गुरु नानक साहिब अपने परिवार की देखभाल के प्रति आश्वस्त होकर अपने मिशन को आगे बढ़ाने हेतु पूर्ण समर्पित हो सके थे। बेबे नानकी जी ने श्री गुरु नानक साहिब को आरंभ से ही आध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखते हुए सांसारिक सम्बन्धों को नये

अर्थ प्रदान किये। श्री गुरु नानक साहिब अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं में जहां भी गये अथवा जब वे करतारपुर साहिब में स्थाई रूप से निवास करने लगे, उनका दर्शन करने जो भी संगत आती, उनमें स्त्री व पुरुष का कोई भेद नहीं होता था। सभी को समान आदर व स्थान मिलता था। सभी एक साथ गुरबाणी का गायन करते थे।

उल्लेखनीय है कि बीबी अमरो जी का ही शबद-गायन सुन कर श्री गुरु अमरदास जी इतने प्रभावित हुए कि सब कुछ त्याग कर श्री गुरु अंगद साहिब की शरण में आ गये थे और अपने अनथक सेवा-कार्यों के पश्चात् उनके बाद गुरुआई पर आसीन हुए थे। उस समय संगत के लिये जो लंगर तैयार किया जाता था उसमें भी सभी का बराबर का योगदान होता था। लंगर पकाने और बांटने की भावना भी स्त्री-गुणों से ही अनुप्राणित थी, क्योंकि घरों में खाना पकाना और परोसना मुख्यत: स्त्रियों का ही दायित्व था। यह प्रेममयी सेवा-भावना आज भी गुरु के लंगर को विशिष्ट बनाती है। श्री गुरु अंगद साहिब की महिल माता खीवी जी स्वयं लंगर तैयार करने और बांटने के कार्य में योगदान करती थीं। गुरमति शब्दावली में गुरु की सुपत्नी को 'महिल' कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जो स्त्रियां सदियों से घर की चाहरदीवारी में कैद थीं, श्री गुरु नानक साहिब के आगमन के बाद धर्म और समाज के कार्यों में बराबरी के आधार पर सक्रिय होने लगी थीं। श्री गुरु अमरदास साहिब ने स्त्री पर्दा-प्रथा एवं सती- प्रथा का भरपूर खंडन किया और विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन कर समाज की सोच को बदलने का बड़ा कार्य किया। सिक्ख इतिहास में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जब सिक्ख स्त्रियों ने आगे बढ़ कर धर्म के हित के लिए महान कार्य किये, बलिदान दिये और अद्‌भुत वीरता का प्रदर्शन किया। वास्तव में यह गुरु साहिबान की प्रेरणा ही नहीं उनके द्वारा स्थापित उदाहरणों का भी परिणाम था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पहले सिक्ख गुरु थे जिन्होंने शस्त्र धारण किये थे और नई परंपरायें आरंभ की थीं। इनमें गुरु साहिब को उनकी माता, माता गंगा जी का बड़ा सम्बल प्राप्त हुआ था। गुरु साहिब माता गंगा जी का इतना सम्मान करते थे कि रोज रात को विश्राम करने जाने से पूर्व अपनी माता जी के दर्शन करने व उनसे आशीर्वाद लेने जाया करते थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तो गुरुआई पर आसीन होने के बाद जो नया नगर बसाया था उसका नाम ही अपनी मां माता नानकी जी के नाम पर 'चक्क नानकी' रखा था, जो बाद में विस्तार पाकर 'श्री अनंदपुर साहिब' बना।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल में सिक्ख स्त्रियों का नया स्वरूप सामने आया था। खालसा पंथ की साजना के बाद जब सिक्ख

संगत ने अमृत-पान किया तो उसमें बड़ी संख्या स्त्रियों की थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल की स्त्रियों में सबसे अधिक उभर कर आया चरित्र माता भाग कौर जी का है, जिनमें वीरता भी थी, संगठन-शक्ति भी थी और आध्यात्मिक समर्पण भी था। माता भाग कौर जी जहां चालीस सिक्खों की मुक्ति का कारण बनीं, वहीं उन्होंने अंत तक गुरु साहिब के साथ रह कर भक्ति की नई परिभाषा भी लिखी। पंजाब से जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण की ओर गये तो माता भाग कौर जी अन्य सिक्खों सहित उनके साथ थीं। गुरु साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद माता भाग कौर जी बिदर के निकट जिनवारा नामक स्थान पर रह कर भक्ति व धर्म-प्रचार करने लगीं। वे अंत तक वहीं रहीं। यह उनके जीवन का सबसे उज्ज्वल पक्ष माना जा सकता है, जो उन्हें आदर्श गुरसिक्ख के रूप में स्थापित करने वाला था। वे सामान्य से आदर्श बनीं, किन्तु उनसे पहले माता गुजरी जी का स्मरण करना उचित है, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की जननी होने के नाते ख़ास तो थी हीं, किन्तु उन्होंने अपने धैर्य और दृढ़ता के साथ एक ऐसा इतिहास रचा जो सारे संसार को सदा विस्मित करता रहेगा। जीवन के अंतिम काल में बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतहि सिंघ जी के साथ माता गुजरी जी का होना मात्र संयोग ही नहीं था, विधाता द्वारा धर्म की ली गई एक अत्यंत कठिन परीक्षा थी। माता गुजरी जी ने मोह के स्थान पर कर्म को, सुख के स्थान पर धर्म को और जीवन के स्थान पर आत्म-चेतना को चुन कर श्री गुरु नानक साहिब के सच के मिशन को अनूठा आयाम प्रदान किया था, जहां किसी संशय, भ्रम, दुविधा का कोई स्थान नहीं था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा था तो सरसा नदी पर बिछड़ कर उनके महिल माता सुंदर कौर जी व माता साहिब कौर जी दिल्ली चले आये थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने के बाद तीन दशक से अधिक समय तक उन्होंने सिक्ख पंथ का नेतृत्व किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद सिक्खों में एकता स्थापित करने व विवाद सुलझाने के लिये उन्होंने मोर्चा संभाला । माता सुंदर कौर जी ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का प्रबंध सुधारने हेतु विशेष ध्यान दिया और भाई मनी सिंघ जी को मुख्य ग्रंथी नियुक्त किया था। उनके द्वारा समय-समय पर हुकमनामे भी जारी किये गये, जिन्हें गुरु साहिबान के हुकमनामों जैसा ही सम्मान प्राप्त हुआ था। यह ऐसा काल था जब सिक्ख पंथ को सक्षम नेतृत्व की सर्वाधिक आवश्यकता थी। माता सुंदर कौर जी व माता साहिब कौर जी ने उस भूमिका को अद्‌भुत संयम, विवेक व सूझबूझ से निभाया और सिक्ख पंथ को

बिखरने से बचाया। माता साहिब कौर जी को तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना के समय ही 'खालसा पंथ की माता' की उपमा से विभूषित कर दिया था। माता सुंदर कौर जी व माता साहिब कौर जी के इस समन्वित और अमूल्य योगदान पर अधिक शोध की आवश्यकता है।

माता सुंदर कौर जी व माता साहिब कौर जी की परंपरा आज भी कायम है। सिक्ख मोर्चों में सिक्ख स्त्रियों की बराबर की सहभागिता समय-समय पर प्रकट होती रही है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हाल ही का किसान आन्दोलन है। जब किसानों ने, जिनमें बड़ी संख्या पंजाब के सिक्ख किसानों की थी, दिल्ली की सीमाओं पर धरना डाल दिया, तो उन्हें नैतिक, आत्मिक व भौतिक समर्थन देने के लिये सिक्ख स्त्रियां भी निर्भीकता के साथ सामने आईं। खुद ट्रेक्टर चला कर धरना-स्थल पर पहुंचने वाली स्त्रियां, धरना-स्थल पर ऑनलाइन क्लास करती युवतियां, मंच पर उत्साह भरने वाले गीत गाती स्त्रियां आदि कुछ ऐसे दृश्य थे, जो इतिहास का हिस्सा बन सदा के लिये अमर हो गये हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों का पक्ष लोगों तक पहुँचाने में सिक्ख युवतियों का बड़ा योगदान रहा है। फेसबुक व ट्विटर पर बड़ी संख्या में खुले सिक्ख युवतियों के अकाउंट आज भी इसकी पुष्टि करते हैं। सच के लिये खड़े होना महत्वपूर्ण है, किन्तु जब यह सबकी सुख-सुविधा, कैरियर, परिवार की कीमत पर हो तब अविस्मरणीय इतिहास बनता है। ऐसी मातायें भी थीं जिनके पति, पुत्र, भाई शहीद हो गये, फिर भी वे मोर्चे में अंत तक डटी रहीं। स्त्री-चेतना का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है!

आज स्त्री को समाज में स्थान देने के नाम पर आरक्षण व विशेषाधिकार की बात होती है और इसे स्त्री-गरिमा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सिक्ख गुरु साहिबान की सोच इससे भी आगे की थी। उन्होंने स्त्री-पुरुष का भेदभाव समाप्त कर मानव के गुणों और आचार को सम्मान दिया। भले ही एक समृद्ध और गौरवशाली परंपरा हमारे साथ आज भी है, किन्तु न जाने क्यों सिक्ख समाज आज उस निर्मल सोच से दूर होता दिख रहा है। वो भी कमोबेश बेटी को भार के रूप में देखने लगा है। ऐसा कटु सत्य विशेष रूप से उस समय सामने आ जाता है जब यदा-कदा विवाह-योग्य एक पुत्र के पिता और एक पुत्री के पिता के स्वर में बड़ा अंतर उभरता दिखाई दे जाता है। व्यवहार के स्तर पर आते-आते यदि हम लोग अपने धर्म-सिद्धांत भूलने लगे तो कोई भी समाज अपनी विरासत का अपराधी बनने से नहीं बच सकता।

बुझु रे गिआनी एहु बीचारु

*-डॉ. नरेश**

श्री गुरु नानक देव जी ने आपसे जिस विचार को बूझने के लिए कहा है, वह अटल सत्य है। यही अध्यात्म का सार है। विचार यह है कि यह शरीर तो पवन, जल, अग्नि आदि पाँच तत्वों का संग्रह है, जो चंचल-चपल बुद्धि का क्रीड़ा-स्थल है। ज्ञानी वो है जो यह जान लेता है कि शरीर नहीं, शरीर के भीतर कैद आत्मा महत्वपूर्ण है। शरीर कैसा ही हो, कितने वर्ष ही क्यों न रह ले, अन्ततः उसको मृत्यु की गोद में ही शरण लेनी होती है, जबकि आत्मा न जीर्ण होती है, न मरती है। इस सत्य तक पहुंचने के लिए शास्त्र-पाठ, तीर्थ-व्रत या कर्मकाण्ड का मार्ग नहीं है, अपने भीतर उतर कर आत्म-ज्ञान प्राप्त करना ही एकमात्र उपाय है, क्योंकि *''रतन पदारथ घट ही माही॥''*

पानी निकालने के लिए गहरा कुआँ खोदना पड़ता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए अपने अन्दर गहरे उतरना पड़ता है। भीतर के सूक्ष्म शरीर को गहरे खोदकर मन और बुद्धि की मिट्टी हटानी होती है और भीतर से चेतना को निकालना होता है। तब तीन प्रकार की शक्तियां जागृत होती हैं— इच्छा-शक्ति, कर्म-शक्ति, ज्ञान-शक्ति। ये तीनों शक्तियां प्राप्त हो जाएं तो मनुष्य का जीवन अनुकरणीय बन जाता है। ये शक्तियां स्वतः ही प्राप्त नहीं हो जातीं, इन्हें श्रमपूर्वक ग्रहण करना पड़ता है।

हमने गाड़ी चलाना सीख लिया, इतने से ही काम नहीं चलेगा। हमें यह भी सीखना होगा कि गाड़ी तंग गलियों, भीड़भाड़ से भरे बाज़ारों में कैसे चलाई जाए, किसी दूसरी गाड़ी को ओवरटेक कैसे किया जाए, ट्रैफिक रूल्ज़ क्या हैं। मतलब यह है कि हमने जीना सीख लिया, लेकिन जीने का ढंग सीखना अभी बाकी है। कैसे सद्चरित बनकर जिया जाए? भक्त कबीर जी के शब्दों में, कैसे चरित्र को दाग लगने से बचाया जाए? कैसे मन-वाणी को शुद्ध रखा जाए? कैसे जीवन को सार्थक बनाया जाए? यह सब हम नहीं कर रहे हैं तो मात्र मृत्यु की प्रतीक्षा में जी रहे हैं। यह भी कोई जीना है?

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला— १३४१०९*

गुरबाणी का पाठ तब ही फलदायक होगा जब हम एकाग्रचित्त होकर अपनी समस्त चेतना को प्रभु पर केंद्रित करेंगे। 'बाणी' के माध्यम से गुरु ने हमें ज्ञान दे दिया, रास्ता दिखा दिया, मंजिल की निशानदेही कर दी, लेकिन इस रास्ते पर चलना हमें है।

आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में अनमोल खजाना हमारे पास है, हमारी धरोहर है। इसका पठन-पाठन ही पर्याप्त नहीं है, इसका चिन्तन-मनन भी परमावश्यक है, क्योंकि :

पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै॥
भीतरि होदी वसतु न जाणै॥ (पन्ना १५२)

पण्डित पुस्तकें पढ़ते हैं, उन पर वाद-विवाद करते हैं, लेकिन शास्त्रों की आत्मा तक नहीं पहुंच पाते हैं। भीतर पड़ा आत्मा रूपी रत्न ही दिव्य ज्ञान का भण्डार है। गुरु अपने स्वानुभूत सत्य आपको प्रदान करता है। सबसे बड़ा सत्य जो गुरु प्रदान करता है वो है :

गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि॥
नानक सोहं हंसा जपु जापहु
त्रिभवण तिसै समाहि॥ (पन्ना १०९३)

श्री गुरु नानक देव जी ने हमें ज्ञान-भवन का ताला खोलने की चाबी दे दी है कि "हम उसी का अंश हैं और वही हमारे अन्दर है।" इस चाबी से ताला खोल लें तो त्रिभुवन को देखा जा सकता है।

समझने की बात इतनी है कि सत्य को जाने बिना प्रभु तक पहुंचना सम्भव नहीं है। जो दिखाई दे रहा है, वह भी सत्य है और जो दिखाई नहीं दे रहा है, वह भी सत्य है। प्रकाश और अंधकार दोनों सत्य हैं। प्रकाश के बिना अंधकार को नहीं जाना जा सकता। अंधकार के बिना प्रकाश की पहचान सम्भव नहीं है। अंधकार प्रकाश की नास्ति का नाम है और प्रकाश स्वयं में कुछ नहीं, सूर्य की कान्ति का नाम है। आप कहेंगे कि प्रकाश चन्द्रमा से भी मिलता है, लेकिन वास्तव में चन्द्रमा के प्रकाश में सूर्य का प्रकाश ही प्रतिबिम्बित होता है। अग्नि प्रज्वलित करके, दीया जलाकर, बिजली द्वारा, बैटरी द्वारा जो प्रकाश उत्पन्न किया जाता है, वह वास्तविक प्रकाश नहीं, कृत्रिम प्रकाश है। अग्नि या दीये को बुझा दें तो प्रकाश समाप्त हो जाएगा। बिजली का स्विच बंद कर दें तो प्रकाश अशेष हो जाएगा। सूर्य को हम नहीं बुझा सकते, क्योंकि उसका प्रकाश शाश्वत है।

गुरमुखि बुढे कदे नाही . . .

– स. तरसेम सिंघ*

श्री गुरु नानक साहिब जी मानव-जीवन की अवस्थाओं को अपनी बाणी में इस प्रकार बयान करते हैं :

दस बालतणि बीस रवणि
तीसा का सुंदरु कहावै ॥
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै
सठी के बोढेपा आवै ॥
सतरि का मतिहीणु असीहां का
विउहारु न पावै ॥
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै
नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ *(पन्ना १३८)*

गुरु साहिब के अनुसार १० वर्ष तक बाली उम्र है, २० वर्ष तक बचपन है, ३० वर्ष का सुंदर कहलाता है, जिसे मदहोशी में कुछ भी याद नहीं रहता। ४० वर्ष का मनुष्य भर जवान होता है। ५० वर्ष तक पैर खिसकने शुरू हो जाते हैं और ६० वर्ष के बाद बुढ़ापा शुरू हो जाता है। ७०वें वर्ष तक(मानों) बुद्धि भ्रष्ट जाती है। ८०वें वर्ष तक मानव कुछ भी करने के योग्य नहीं रहता। ९० वर्ष के बाद जीने का कोई आनंद नहीं।

वृद्ध अवस्था सबसे ज्यादा संवेदनशील अवस्था है। इस अवस्था को कोई भी कबूल करने के लिए तैयार नहीं, मगर भोगनी पड़ती है। बचपन जवानी का इंतज़ार करता है, परन्तु जवानी बुढ़ापे का इंतजार नहीं करती, बल्कि उसे रोकने के लिए कई कोशिशें करती है, जिसका कोई अंत नहीं। कुछ समय के लिए इस अवस्था से राहत पाने के लिए मानव भ्रम अवश्य पाल लेता है। इसे सहर्ष कोई स्वीकार नहीं करता। बुढ़ापा ऐसी अवस्था है जो एक बार आ गई तो फिर आकर जाती नहीं। यह सच्चाई है कि हम सांसारिक जीव बचपन से जवानी में पहुँचने के लिए ख़ुराक खाते हैं, जवानी बरकरार रखने के लिए कई कोशिशें करते हैं, परन्तु बुढ़ापा आने की न तो कोई दवा खाता है और न ही बुढ़ापे की कोई प्रतीक्षा करता है।

भक्त शेख फ़रीद जी जवानी को याद करते हुए बुढ़ापे को बड़े ख़ूबसूरत शब्दों में इस तरह बयान करते हैं :

फरीदा इनी निकी जंघीऐ
थल डूंगर भविओम्हि ॥
अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥
(पन्ना १३७८)

अर्थात् इन पैरों से चलकर बहुत दूर तक

*३६३/१४, न्यू संत नगर, गुरदासपुर, फोन : ९४६५६-५६२१४

चक्कर लगा आता था। आज मुझे कोने में रखी पानी वाली मटकी भी १०० कोस दूर लग रही है। बुढ़ापे में शारीरिक सामर्थ्य कम हो जाता है। अच्छे-भले शारीरिक अंग काम करना कम कर देते हैं। शरीर कई रंग बदलता है :

फरीदा अखी देखि पतीणीआं
सुणि सुणि रीणे कंन ॥
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥
(पन्ना १३७८)

बुढ़ापे की दयनीय दशा को भक्त भीखण जी ने सोरठि राग में इस तरह बयान किया है :

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै
अब किआ करहि परानी ॥ (पन्ना ६५९)

उम्र भर दुनियावी काम-काज में व्यस्त इंसान परमात्मा को अन्तिम समय तब याद करता है जब किसी लायक नहीं रहता :

चरन सीसु कर कंपन लागे
नैनी नीरु असार बहै ॥
जिहवा बचनु सुधु नही निकसै
तब रे धरम की आस करै ॥ (पन्ना ४७९)

बुढ़ापा ही वास्तव में आत्मविश्लेषण का समय होता है। जिनके लिए झूठ-आदि बोला होता है, ठगी-चोरी आदि की होती है, जब वे सहारा नहीं बनते, तब मनुष्य का अपने द्वारा किए बुरे कामों को याद कर पछताना स्वाभाविक है। भक्त कबीर जी का फरमान है :

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥
सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥१ ॥
मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥
(पन्ना ६५६)

भूत काल को कोई नहीं हासिल कर सकता। वास्तव में जवानी के समय बुढ़ापा याद ही नहीं रहता। बहुत कम लोग होते हैं जो बुढ़ापे का लुत्फ उठाते हैं। वैसे लुत्फ उठाना और भोगना अलग-अलग विषय हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं :

गुरमुखि बुढे कदे नाही
जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ (पन्ना १४१८)

भावार्थ— गुरु के सम्मुख रहने वाले जिन मनुष्यों के अंदर प्रभु-चरणों की लगन चाह बनी रहती है जिन्हें आत्मिक जीवन की समझ बनी रहती है, वे मनुष्य (आत्मिक) जीवन में कभी कमज़ोर नहीं होते। परमात्मा की भक्ति करने से जिनकी आंतरिक चेतना कायम होती है, वे बुढ़ापे को स्वीकार कर संतुष्टि भरा जीवन जीते हुए कभी बूढ़े नहीं होते। बुढ़ापा फिर बुढ़ापा नहीं रहता, बल्कि आत्मिक सुख का समय बन जाता है, जिसके तजुर्बे से अन्य कईयों को ल़ाभ हो सकता है। आओ! बुढ़ापे को जीयें! इस आयु का लुत्फ उठायें! जीवन के इस अंतिम पड़ाव को सुखमय बनाएं!

गुरबाणी तथा लोक-संगीत

-प्रो. पिआरा सिंघ पद्म (दिवंगत)

विद्वान संगीतकारों ने संगीत के दो भेद किये हैं— शास्त्रीय-संगीत और लोक-संगीत। यदि गहनता से देखा जाये तो पता चलेगा कि मूल आधार लोक-संगीत ही है। जैसे तमाम साहित्यक ज़ुबानें, लोक-बोलियों से विकसित होकर, सज-संवर कर साहित्यक भाषायों के सिंहासन पर आ विराजमान हुई हैं, इसी तरह मूल लोक-धुनें धीरे-धीरे विकास कर और तथा कुछ तकनीकी नियमावली में बंध कर शास्त्रीय संगीत की पदवी धारण कर गई हैं। इस धारणा की पुष्टि इस बात से भी होती है कि जितने भी शास्त्रीय संगीत के गवैये हैं, वे अपनी कलाकारी दिखाने के लिए जो दो-चार पंक्तियां बार-बार दोहराते और बार-बार गाते हैं, वे भी ज़्यादातर पुरातन लोक-गीतों का ही हिस्सा होती हैं।

गुरबाणी का जीवन-आदर्श प्रभु-संयोग है। इस संयोग के लिए आत्मा को तैयार करने हेतु संगीत का सहारा लिया जाता है। इसमें जहाँ शास्त्रीय संगीत के पक्के राग इस्तेमाल किए गए हैं, वहीं लोक-संगीत को आँखों से ओझल नहीं किया गया, बल्कि उसका भरपूर प्रयोग हुआ है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लोक-संगीत या देसी धारणा के आधार पर काफ़ी बाणी उच्चारण की गई है। ये लोक-धारणाएं उस समय आम प्रचलित थीं और लोगों में लोकप्रिय थीं, इसलिए संतों-भक्तों और गुरु साहिबान ने लोक-धारणा के आदर्श एंव बहुभांतीय रूहानी शबदों का उच्चारण किया, बंदिशें बनाईं, ताकि जनसाधारण इनसे स्वाभाविक ही प्रेरणा प्राप्त कर सके। लोक-काव्य और लोक-संगीत के जो रूप अपनाए गए, उनका विवरण इस प्रकार है :—

१. अलाहुणीआं
२. आरती
३. अंजुली
४. सदु
५. सोहिला
६. करहले
७. काफी
८. घोड़ीआं
९. चउबोले
१०. छंत
११. डखणे
१२. थिती
१३. दिन रैणि
१४. पहरे
१५. पटी
१६. बारह माहा
१७. बावन अखरी

१८. बिरहड़े
१९. मंगल
२०. रुती
२१. वणजारा
२२. वार
२३. वार सत
आदि

इनमें कई लोक-काव्य ऐसे हैं जिनकी छंदबंदी की नियमावली नियत है और उस कारण उनके गाने की शैली भी निश्चित है। काव्य और संगीत का परस्पर सम्बन्ध है, इसलिए 'अलाहुणी' की धुन 'आरती' के साथ नहीं लगाई जा सकती और न ही 'आरती' की गायन-धुन 'अलाहुणी' के साथ जोड़ी जा सकती है। इस चर्चा से हमारा भाव यह स्पष्ट करना है कि ये काव्य-रूप भी लोक-संगीत के पीछे-पीछे चलते हैं। इनकी गहरी रिश्तेदारी लोक-जीवन के साथ जुड़ी हुई है। गुरबाणी में इस्तेमाल किए गए लोक-काव्य के ये रूप, विशेष विचार के योग्य हैं।

१. अलाहुणी : यह शोक-गीत है। बिछड़े स्नेही की याद में किया विलाप इसका कलेवर सृजित करता है। गुरु साहिब ने वडहंस राग में इस लोक-धारणा को आधार बना कर संसार की नाशमानता दिखाई है।

२. आरती : इष्ट देव की महिमा और पूजा के लिए यह लय इस्तेमाल की जाती है, जिसमें पूजनीय देवता से कुर्बान जाया जाता है। 'धनासरी' की सुर इसके लिए ज्यादा उपयुक्त समझी गई है। इसीलिए श्री गुरु नानक देव जी के अलावा कई भक्त साहिबान ने भी 'आरती' इन सुरों में उच्चारण की है।

३. अंजुली: विनती का गीत 'अंजुली' कहलाता है। यह मारू राग में प्राप्त है।

४. सदु : यह शोक-गीत है, जो लंबे अलाप के साथ गाया जाता है। बाबा सुंदर जी ने श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-जोति समा जाने के पश्चात् उनके वियोग और उनकी अंतिम शिक्षा को रामकली राग में उच्चारण किया है। दशमेश जी ने लक्खी जंगल में 'त्रैतुकी सदु' उच्चारण की, जो दसम ग्रंथ में दर्ज है।

५. सोहिला : ख़ुशी के गीत को 'सोहर' या 'सोहिला' कहते हैं। यह जन्म-उत्सव और विवाह-उत्सव के समय गाया जाता है। गउड़ी राग में श्री गुरु नानक देव जी का एक शबद इसी शीर्षक से है।

६. करहले : सिंधी में 'करहा' या 'करहल' ऊँट का वाचक है। शुतुरवानों की लोक-धारणा 'करहला' कहलाती है। राजस्थान में इसका प्रचार ज्यादा है। श्री गुरु रामदास जी के इस धारणा पर गउड़ी राग में दो शबद हैं।

७. काफ़ी : जिस प्रकार वैष्णव साधुओं का प्रेम-गीत बिशनपदा कहलाता है, उसी प्रकार मुस्लिम फकीरों या सूफियों के प्रेम-गीत 'काफीआ' नाम से पुकारे जाते हैं। 'काफ़ी' का अर्थ बार-बार गाना है। कव्वाल महफ़िलों में यह गीत बार-बार दोहरा कर गाते हैं, इसलिए यह नाम प्रसिद्ध हो गया। गुरु साहिबान ने आसा, तिलंग, सूही और मारू राग में इसका प्रयोग किया है। बाद में यह लोक-धुन विशेष

राग का रूप भी धारण कर गई ।

८. घोड़ीआं : विवाह के समय जब दूल्हा घोड़ी पर चढ़ता है तो बहनें जो ख़ुशी के गीत गाती हैं, वे घोड़ीआं कहे जाते हैं । श्री गुरु रामदास जी ने लोक-संगीत की इस धुन को वडहंस राग में इस्तेमाल किया है ।

९. चउबोले : इस नाम का एक मात्रिक छंद भी है, लेकिन गुरबाणी में पंचम पातशाह के ख़ास ११ सलोक 'चउबोले' शीर्षक अधीन दर्ज हैं । कुछ विद्वान यह भी कहते हैं कि यह चार सिक्खों— संमन, मूसन, जमाल, पतंग के प्रति उपदेश है । कइयों का ख़्याल है कि इसमें चार भाषायों का मेल है । बहरहाल, यह एक लोक-गीत है, जिसमें प्रेम-भावना की प्रबलता होती है ।

१०. छंत : स्त्रियों के विशेष प्रेम-गीत 'छंत' कहलाते हैं । छंत, छंद से भिन्न है । इसमें चार बंद होते हैं । पहले बंद के माध्यम से वियोग की दर्दनाक अवस्था दिखा कर फिर चौथे में संयोग का आनंद गायन किया होता है । ये 'छंत' नारी सुर में अनेक रागों में प्राप्त हैं ।

११. डखणे : लहिंदी (पश्चिमी) में सलोक प्राय: 'डखणा' कहा जाता है। सिंधी में 'डखणा' ढोल को भी कहते हैं, क्योंकि यह सलोक सर्वप्रथम ढोल की धुन पर गाने का रिवाज़ था, इसलिए यह नाम प्रसिद्ध हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने मारू राग की वार में 'डखणे' शामिल किये हैं । सिरीराग के छंतों के साथ भी पाँच डखणे लिखे मिलते हैं ।

१२. थिती (तिथियों) : पंद्रह थितों या तिथों के आधार पर उच्चरित बाणी का शीर्षक 'थिती' है । श्री गुरु नानक देव जी ने बिलावल राग में और भक्त कबीर जी ने गउड़ी राग में 'थिती' बाणी उच्चारण की है ।

१३. दिनरैणि : माझ राग में श्री गुरु अरजन देव जी ने इस शीर्षका धीन बाणी उच्चारण की है ।

१४. पहरे : चार पहरों के आधार पर उच्चरित बाणी 'पहरे' कही जाती है । इसमें जीवन की चार अवस्थाएं बता कर शिक्षा दी गई है। सिरीराग में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी ने पहरे लिखे हैं ।

१५. पटी : गुरमुखी वर्णमाला के आधार पर उच्चरित बाणी 'पटी' कहलाती है । आसा राग में श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने इसका प्रयोग किया है । इससे उस समय की अक्षर-माला की तरतीब का भी पता चलता है ।

१६. बारह माहा : बारह महीनों के आधार पर उच्चरित बाणी 'बारह माहा' कहलाती है। इसमें वियोग और संयोग की तरफ का रोमांचकारी सफ़र दर्शाया जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने तुखारी राग में और श्री गुरु अरजन देव जी ने माझ राग में 'बारह माहा' बाणी का उच्चारण किया है । श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी 'बारह माहा' का उच्चारण किया, जो दसम ग्रंथ के 'क्रिशनावतार' भाग में शामिल है ।

१७. बावन अखरी : देवनागरी के बावन अक्षरों के आधार पर उच्चरित बाणी 'बावन

अखरी' है। भक्त कबीर जी और श्री गुरु अरजन देव जी ने इसका प्रयोग गउड़ी राग में किया है।

१८. बिरहड़े : वियोग का विषय लेकर उच्चरित बाणी ' बिरहड़े' कहलाती है। आसा राग में पंचम पातशाह ने तीन छंद उच्चारण किये और इन्हें 'छंतों की जति' पर गायन करने का आदेश दिया गया है।

१९. मंगल : इस नाम से रचित काव्य-खंड को खुशी के अवसर पर गाया जाता है और विशेषतया विवाह-उत्सव के समय गाया जाता है। हिंदी साहित्य में जानकी मंगल, पार्वती मंगल और रुकमणि मंगल प्रसिद्ध हैं। श्री गुरु रामदास जी ने बिलावल की सुरों में 'मंगल' उच्चारण किया है।

२०. रुती : छ : रुतों (ऋतुओं) के आधार पर उच्चरित बाणी 'रुती' है। रामकली राग में श्री गुरु अरजन देव जी ने इसका प्रयोग किया है। संस्कृत साहित्य में 'खट ऋतु वर्णन' इसी का पुरातन रूप है।

२१. वणजारा : प्राचीन काल में चक्रवर्ती व्यापारी सौदा भर कर एक जगह से दूसरी जगह जाते समय लंबे अलाप में गीत गाते हुए जाते थे। इसी आधार को लेकर श्री गुरु रामदास जी ने सिरीराग में बाणी उच्चारण की है।

२२. वार सत : यह 'सतवारा' का प्राचीन रूप है। इसमें दिनों या वारों का नाम लेकर शिक्षा दी गई है।

२३. वार : किसी युद्ध-वार्ता को पउड़ी में गूँथ कर पेश करना 'वार' है। यह काव्य-रूप बहुत प्रसिद्ध रहा है। इसी लिए गुरु साहिबान ने अलग-अलग रागों में २१ वारें उच्चारणा कीं और २२वीं वार भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी की किरत है। फिर ख़ूबी यह कि इनमें से कई वारों को कुछ प्रसिद्ध प्राचीन लोक-वारों की धुन पर गायन करने का संकेत दिया गया है, जैसे :

१. वार माझ— मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनि
२. वार आसा— टुंडे अस राजे की धुनि
३. वार गउड़ी— राइ कमालदी मौजदी की वार की धुनि
४. वार गूजरी— सिकंदर बिराहम की वार की धुनि
५. वार वडहंस— लाला बहिलीमा की धुनि
६. वार रामकली— जोधै वीरै पूरबाणी की धुनि
७. वार सारंग— राइ महमे हसने की धुनि
८. वार मलार— राणे कैलास तथा मालदे की धुनि
९. वार कानड़ा— मूसे की वार की धुनि

ये सूचनाएँ बताती हैं कि तब ये वारें गायन करने की ख़ास लोक-रीतियां प्रचलित थीं और इन प्रचलित रीतियों पर ही गुरु साहिबान ने अपनी उच्चरित आध्यात्मिक वारें गायन करने का आदेश दिया। इससे इस बात की और पुष्टि होती है कि लोक-संगीत इतना प्रबल था और अब भी है कि इसे न किसी ने भुलाया है और न ही कभी भुलाया जा सकता है।

मानव-सेवा की आदर्श मिसाल : बीबी भानी जी कन्या नेत्रहीन विद्यालय

*-सतविंदर सिंघ फूलपुर**

गुरमति आशयानुसार में सेवा को मानव जीवन का उच्च आदर्श माना गया है। इस उच्च आदर्श को व्यवहारिक जीवन में अपनाते हुए ज़रूरतमंदों की सेवा और परोपकार के लिए आगे आना प्रत्येक गुरसिक्ख का परम उद्देश्य है। पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार, सेवा केवल पंखा झुलाना, लंगर छकाना आदि पर नहीं ख़त्म हो जाती, सिक्ख की सारी ज़िंदगी परोपकार वाली है। गुरु साहिबान ने खुद ज़रूरतमंदों, बेसहारों, दुखियों की सेवा कर गुरसिक्खों के लिए मिसाल कायम की है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार वही मानव परमात्मा के दर पर स्वीकार किए जाते हैं, जो इस जगत में विचरण करते हुए मानव-सेवा की कमाई करते हैं :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

सेवा का घेरा बहुत विशाल है, जैसे गरीबों-बेरोज़गारों के लिए रोज़गार के साधन मुहैया करवाना, जरूरतमंद बच्चों के लिए पढ़ाई के साधन पैदा करना, अंगहीनों, बेसहारों की सेवा-संभाल करनी आदि। ऐसे ही सेवा-कार्य कर रही संस्थाएं— पिंगलवाड़ा, अंध विद्यालय, सेंट्रल खालसा यतीमखाना श्री अमृतसर आदि मानवता की शुभ आशीष की हकदार हैं।

इस लेख में हम ऐसी ही एक संस्था— बीबी भानी जी कन्या नेत्रहीन विद्यालय के बारे में बात करेंगे। पानी से भी ज्यादा निर्मल और मख़मल से भी ज्यादा कोमल हृदय रखने वाली स्त्रिया— पुत्री, बहन, पत्नी, माँ आदि कई रिश्तों के रूप में परिवार और समाज को रिश्तों के मोह के बंधन में पिरो कर रखती हैं। ये अपने हर रिश्ते के फ़र्ज़ निभाती हुई आदर्श परिवार और आदर्श समाज की सृजना करती हैं। ऐसे में यदि अकाल पुरख के हुक्मानुसार जन्म से या बाद में किसी बीमारी या हादसे के कारण किसी बेटी की आँखों की रोशनी सदा के लिए चली जाये तो उसके माँ-बाप पर जो बीतती है, उसे वे ख़ुद ही जान सकते हैं। आँखों की रोशनी के बिना जहान सूना-सा लगने लग जाता है। समाज की नेत्रहीन बच्चियों को परिवार जैसा माहौल

*संपादक, गुरमति ज्ञान तथा गुरमति प्रकाश। फोन : ९९१४४-१९४८४

देकर उनकी परवरिश कर रही है यह संस्था— बीबी भानी जी कन्या नेत्रहीन विद्यालय, जो कि गुरुद्वारा छेहरटा साहिब (श्री अमृतसर) से गुरुद्वारा संन साहिब मार्ग पर गुरुद्वारा छेहरटा साहिब से कुछ गज़ की दूरी पर स्थित है।

स्थापना : भारत नेत्रहीन सेवक समाज (रजिस्टर्ड) लुधियाना की श्री अमृतसर शाखा के सदस्य साहिबान की दीर्घ सोच और प्रशंसनीय प्रयत्न से नेत्रहीन लड़कियों की भलाई के लिए एक संस्था बनाने का निर्णय लिया गया। इस महान परोपकारी कार्य का शुभारंभ २६ मार्च, १९८६ ई. को पंथक शख्सियत बाबा खड़क सिंघ कार सेवा वालों की उपस्थिति में उनके हुक्मानुसार बाबा दरशन सिंघ ने किया। इसके पश्चात् २७ मार्च, १९८७ ई. को श्री अमृतसर शाखा के सभी वरिष्ठ सदस्य साहिबान की उपस्थिति में गुरुद्वारा छेहरटा साहिब की तत्कालीन लोकल कमेटी के प्रधान स. गुरदिआल सिंघ ने इमारत का निर्माण-कार्य आरंभ किया। इमारत तैयार हो जाने पर २६ मार्च, १९९० ई. को संकल्प अधीन निर्धारित संस्था की शुरुआत की गई। प्रारंभ में संस्था का उद्देश्य नेत्रहीन बच्चियों को किसी व्यवसाय का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना था, इसलिए संस्था का नाम 'बीबी भानी जी स्त्री नेत्रहीन किरत एवं प्रशिक्षण केंद्र' रखा गया था, लेकिन अब कुछ समय से यह संस्था 'बीबी भानी जी कन्या नेत्रहीन विद्यालय' नाम से कार्यरत है।

बीबी भानी जी सिक्ख जगत की बहुत ही आदरणीय हस्ती हैं, जिन्हें गुरु-पुत्री, गुरु-पत्नी, गुरु-माता, गुरु-दादी, गुरु-परदादी और गुरु-नकड़दादी होने का सम्मान प्राप्त है। सेवा, सिमरन, नम्रता वाले स्वभाव के मालिक बीबी भानी जी ने अपने जीवन-काल में कठिन से कठिन समय भी देखा, परन्तु वे हमेशा परमेश्वर के हुक्म और शुक्राने में रहे। बीबी भानी जी के ऐसे ही ऊँचे आदर्शों का अभिवादन करते हुए, नेत्रहीन बच्चियों को बीबी भानी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अकाल पुरख के हुक्म में धैर्य और साहस के साथ जीवन की मुश्किलों का सामना करने के लिए निरंतर प्रेरणा देने की ख़ातिर प्रबंधकों द्वारा इस संस्था का नाम बीबी भानी जी के नाम पर रखने का लिया गया निर्णय प्रशंसनीय है।

इस इमारत के निर्माण-कार्य में बीबी प्रीत कौर और स. प्रेम सिंघ का विशेष योगदान रहा। इनके अलावा समय- समय पर इस शुभ कार्य में सहयोग देने वाले सूबेदार मेजर स. गुरचरन सिंघ, स. राजनबीर सिंघ, श्री कपिल, स. कुलजीत सिंघ यू. एस. ए., भाई बलदेव सिंघ, श्री अक्षय कुमार आदि दानी सज्जनों के नाम भी विशेष वर्णनयोग्य हैं।

एक बात का यहाँ विशेष जिक्र करना बनता है तथा हम सबके लिए बहुत ही प्रेरणा-स्रोत व फख्र करने वाली बात भी है कि इस संस्था के सभी कर्त्ता-धर्त्ता सज्जन खुद भी नेत्रहीन हैं, जिनमें पंथ के माननीय भाई गुरमेज सिंघ पूर्व हजूरी रागी श्री दरबार साहिब, दिवंगत मास्टर महिंगा सिंघ, दिवंगत भाई दरशन सिंघ, दिवंगत मास्टर रत्न चंद केसर, दिवंगत प्रिंसिपल गुरजंट सिंघ एमए नेशनल अवार्डी, दिवंगत मास्टर भोला नाथ, मास्टर मनजीत सिंघ, दिवंगत स. सेवा सिंघ, दिवंगत भाई करनैल सिंघ रागी, दिवंगत भाई अमरीक सिंघ रागी, श्री राजपाल महेंद्रू, भाई जोगिंदर सिंघ पूर्व हजूरी रागी श्री दरबार साहिब, दिवंगत मास्टर सकत्तर सिंघ, दिवंगत भाई लछकर सिंघ रागी आदि नाम उल्लेखनीय हैं। आज जहाँ खुदगर्जी पदार्थवादी युग में किसी को अपने आप से, अपने परिवार से फ़ुर्सत नहीं, वहीं उक्त सज्जन खुद नेत्रहीन होने के बावजूद अपने-अपने परिवार की परवरिश के साथ-साथ नेत्रहीन बच्चियों की इस संस्था को अहमियत देकर इस सेवा को निभाते रहे हैं और निभा रहे हैं। यह बेहद प्रशंसनीय प्रयत्न है। यह सब गुरु पातशाह की इन पर विशेष कृपा के कारण ही संभव हुआ है। वर्तमान समय में प्रधान स. प्रताप सिंघ रागी, केंद्रीय प्रधान जोगिंदर सिंघ, महासचिव श्री धर्म पाल प्रोफेसर सरूप रानी कालेज श्री अमृतसर, खजानची श्री घनश्याम और मुख्य प्रबंधक मास्टर सकत्तर सिंघ इस सेवा को २१ सदस्यीय कार्यकारी समिति (७ सदस्य मंत्री-मंडल तथा १४ अन्य सदस्य) के सहयोग से बड़ी निपुणता के साथ निभा रहे हैं। इन सदस्य साहिबान में मास्टर बलविंदर सिंघ पट्टी, उस्ताद रूहताश बाली, प्रो. राजेश शर्मा, रागी भाई सुखवंत सिंघ आदि नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सीमित साधनों के बावजूद इन सज्जनों के प्रयत्न और दानी सज्जनों के सहयोग से आज लगभग २२ मरले जमीन पर २२ कमरों वाली दो-मंजिला इमारत में यह विद्यालय चल रहा है। इस समय २० नेत्रहीन बच्चियाँ इस विद्यालय में परवरिश और विद्या हासिल कर रही हैं। सन् २०१७ में इस विद्यालय की ६ बच्चियों की बतौर संगीत अध्यापक विभिन्न स्कूलों में सरकारी नौकरी के तौर पर नियुक्ति हुई है। बच्चियों को ब्रेल प्रणाली के माध्यम से इंटरमीडिएट (+२) तक शिक्षा प्रदान करवाई जाती है। होनहार बच्चियों के लिए यूनिवर्सिटी स्तर तक शिक्षा का प्रबंध संस्था द्वारा किया जाता है। इसके साथ कंप्यूटर, संगीत-गायन और संगीत-वादन का भी डिग्री स्तर का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षा, प्रशिक्षण, लंगर और छात्रावास का सारा ख़र्च

संस्था द्वारा किया जाता है। बच्चियों की सेवा-संभाल के लिए स्त्री अमला रखा गया है, जिसमें एक सुप्रिंटेंडेंट, एक होस्टल वार्डन, रसोइया आदि शामिल हैं। संस्था द्वारा छात्रावास में बच्चियों को हर प्रकार की सुविधा मुहैया करवाने का पूरा यत्न किया जाता है। बिजली की सुविधा के लिए एक बड़ा जनरेटर, सर्दियों में गर्म पानी के लिए गीज़र आदि का प्रबंध किया गया है। इस विद्यालय की एक विशेष ख़ासियत यह है कि यहाँ नेत्रहीन बच्चियों की शिक्षा के साथ-साथ उनकी परवरिश कर उन्हें इस तरह तैयार किया जाता है कि वे ज़िंदगी में घरेलू कामकाज में भी किसी के अधीन न रह कर खुद अपना परिवार सँभालने के योग्य बन सकें। इस उद्देश्य के लिए बच्चियों को अपने कमरे की साफ़-सफ़ाई करने और रसोई का काम करने का भी विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाता है।

अब तक १७० के लगभग नेत्रहीन लड़कियाँ इस विद्यालय में से शिक्षा प्राप्त कर चुकी हैं, जिनमें से कई लड़कियाँ नौकरियाँ कर रही हैं और अनंद कारज (विवाह) करवा कर गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रही हैं।

इस संस्था के आग्रह पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने इस विद्यालय को प्रति माह ५००००/- रुपए की वित्तीय सहायता देनी शुरू की है, जिसके लिए यह संस्था एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, प्रधान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का धन्यवाद करती है और भी समाज-कल्याण की संस्थाओं की तरफ से ऐसे प्रशंसनीय कार्य किये जाने चाहिए। संस्था के प्रबंधकों की समूह संगत से विनती है कि जहाँ कहीं भी किसी नेत्रहीन बच्ची के बारे में पता चले, उस बच्ची के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए उसे इस संस्था में दाख़िल करवाया जाए।

परमात्मा के समक्ष हमारी अरदास है कि वह इस संस्था की समूह बच्चियों, अध्यापकों और प्रबंधकों के सिर पर अपना कृपा भरा हाथ बनाए रखें और उन्हें चढ़दी कला प्रदान कर प्रबंधकों से खुद यह सेवा लेते रहें। संस्था की वेबसाईट का नाम है :—

www. bbknetarheenvidiala. com

खबरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सदस्य प्रिंसिपल भगवंत सिंघ के निधन पर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ द्वारा दुख प्रकट

श्री अमृतसर : २७ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सदस्य प्रिंसिपल भगवंत सिंघ के निधन पर गहरे दुख का इज़हार किया है। प्रिंसिपल भगवंत सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य और गुरुद्वारा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पातशाही छठी गुरूसर सधार के प्रधान भी रहे हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) ने प्रिंसिपल भगवंत सिंघ के निधन को बड़ा पंथक घाटा करार दिया है। उन्होंने कहा कि प्रिंसिपल भगवंत सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सदस्य रहते हुए जहाँ धर्म प्रचार की सेवाएं निभाई हैं, वहीं गुरुद्वारा प्रबंध की बेहतरी के लिए भी कार्य किये हैं। उन्होंने प्रिंसिपल भगवंत सिंघ के परिवार के साथ हमदर्दी प्रकट करते हुए बिछड़ी रूह को श्रद्धाँजलि भेंट की।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कनिष्ठ उपाध्यक्ष प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ, महासचिव स. करनैल सिंघ पंजोली ने भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सदस्य प्रिंसिपल भगवंत सिंघ के निधन पर अफ़सोस प्रकट करते हुए परिवार के साथ हमदर्दी प्रकट की।

दिल्ली में नौजवान लड़की पर किया गया अमानवीय अत्याचार समाज के माथे पर कलंक : एडवोकेट हरजिंदर सिंघ

श्री अमृतसर : ३१ जनवरी : दिल्ली में नौजवान लड़की के साथ किया गया अमानवीय अत्याचार जुल्म की इंतहा है, और दोषियों को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए, यह कहना है शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) का। उन्होंने कहा कि इस प्रकार किसी इंसान को ज़लील करना मानव जीवन-मूल्यों के विरुद्ध है, जिसकी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सख़्त शब्दों में निंदा की जाती हैं। उन्होंने दिल्ली में घटित इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के दोषियों को सख़्त सज़ा देने की माँग करते हुए कहा कि इससे शर्मनाक बात और क्या हो सकती है कि एक बेबस और अकेली लड़की पर सामूहिक

रूप से जुल्म किया गया हो। इससे भी अफ़सोसजनक यह है कि इसमें औरतें भी शामिल थीं। उन्होंने कहा कि केश काटने और मुँह काला करने की जो मानवता से गिरी हुई हरकत दोषियों ने की है, यह समाज के माथे पर कलंक से कम नहीं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने दिल्ली और केंद्र सरकार से माँग की कि दोषी किसी भी हालत में बख्शे नहीं जाने चाहिए। एक-एक दोषी की पहचान कर उसे मिसाली सज़ा दी जाये। यदि दोषियों को सज़ा न मिली तो ऐसे अन्य लोगों के हौसले और बढ़ेंगे, जो समाज के लिए घातक है। उन्होंने कहा कि इस मामले की सरकार द्वारा हर स्तर पर गहराई से जांच करवाई जाये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भी इस मामले की पड़ताल करने के लिए दिल्ली सिक्ख मिशन के अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारी जो भी रिपोर्ट देंगे उसके अनुसार आगे की कार्यवाही की जाएगी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को किताब कहने पर मुहम्मद मुस्तफा सिक्ख कौम से माफी माँगे : एडवोकेट हरजिंदर सिंघ

श्री अमृतसर : १ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) ने कांग्रेसी नेता मुहम्मद मुस्तफा द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को किताब कहने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए सिक्ख कौम से माफी मांगने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी समूची मानवता के आध्यात्मिक गुरु हैं। उन्होंने कहा कि दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति-जोत समाने से पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुता प्रदान कर सिक्ख कौम को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लड़ लगाया था। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सिक्ख कौम की गहरी श्रद्धा है, जिसमें दर्ज गुरबाणी से नेतृत्व लेकर सिक्ख अपना जीवन बसर करते हैं। उन्होंने कहा कि जागत ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को किताब कहना मुहम्मद मुस्तफा की कुंठित मानसिकता का प्रकटावा है। उन्होंने कहा कि उनके इस बयान से सिक्ख कौम की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि मुहम्मद मुस्तफा सार्वजनिक रूप से माफी मांगे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनके ख़िलाफ़ कानूनी कार्यवाही की जायेगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने यू. के. की गृह सचिव द्वारा सिक्खों के विरुद्ध की गई टिप्पणी को लेकर ब्रिटिश हाई कमिशनर को लिखा पत्र

श्री अमृतसर : ५ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने यूनाइटेड किंगडम (यू. के.) की गृह सचिव प्रीति पटेल द्वारा सिक्खों के विरुद्ध की गई टिप्पणी को लेकर ब्रिटिश हाई कमिशनर को पत्र लिखा है। प्रीति पटेल ने १९ नवंबर, २०२१ को वाशिंगटन डी. सी. में हेरिटेज फाउंडेशन को संबोधित करते हुए सिक्खों के विरुद्ध बयान दिया था, जो अब सामने आया है। उसने कहा था कि सिक्ख अलगाववादी कट्टरपंथियों ने भी हाल ही के वर्षों में काफ़ी तनाव पैदा किया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) ने ब्रिटिश हाई कमिशनर को लिखे पत्र में कहा है कि १९ नवंबर, २०२१ ई. को यू. के. की गृह सचिव प्रीति पटेल ने वाशिंगटन डी. सी. में एक भाषण दिया था, जिसमें सिक्खों के विरुद्ध विचार हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि यू. के. की सिक्ख जत्थेबंदियों द्वारा इस मुद्दे को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ध्यान में लाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रीति पटेल का संबोधन सिक्ख कौम के अक्स को भारी ठेस पहुँचाने वाला है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ (धामी) ने कहा कि यू. के. में सिक्खों का सकारात्मक योगदान देने का लंबा इतिहास है। कोविड-१९ महामारी के दौरान यू. के. सहित दुनिया भर के सिक्ख भाईचारे ने मानवतावादी यत्नों में बड़ा योगदान दिया था। उन्होंने कहा कि दुनिया भर के सिक्खों ने अपनी मेहतन से विभिन्न देशों में उच्च स्तर पर मुकाम हासिल किया है, मगर पटेल जैसी नेताओं द्वारा किया जा रहा प्रचार सिक्ख कौम के अक्स को खोरा लगाने वाला है। उन्होंने कहा कि हमें इस बात की गहरी चिंता है कि वरिष्ठ राजनीतिज्ञों द्वारा आपस में फूट डालने वाली बेबुनियाद बयानबाज़ी दुनिया भर में सिक्खों के विरुद्ध नफ़रती अपराध को जन्म दे सकती है। उन्होंने कहा कि गृह सचिव प्रीति पटेल सिक्ख कौम को ठेस पहुँचाने वाली हरकतें कर सिक्ख समाज के विरुद्ध बेबुनियाद दावे कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रीति पटेल सिक्ख भाईचारे के विरुद्ध की गई बयानबाज़ी के लिए क्षमा मांगे और अपने बेबुनियाद बयान को वापस ले।

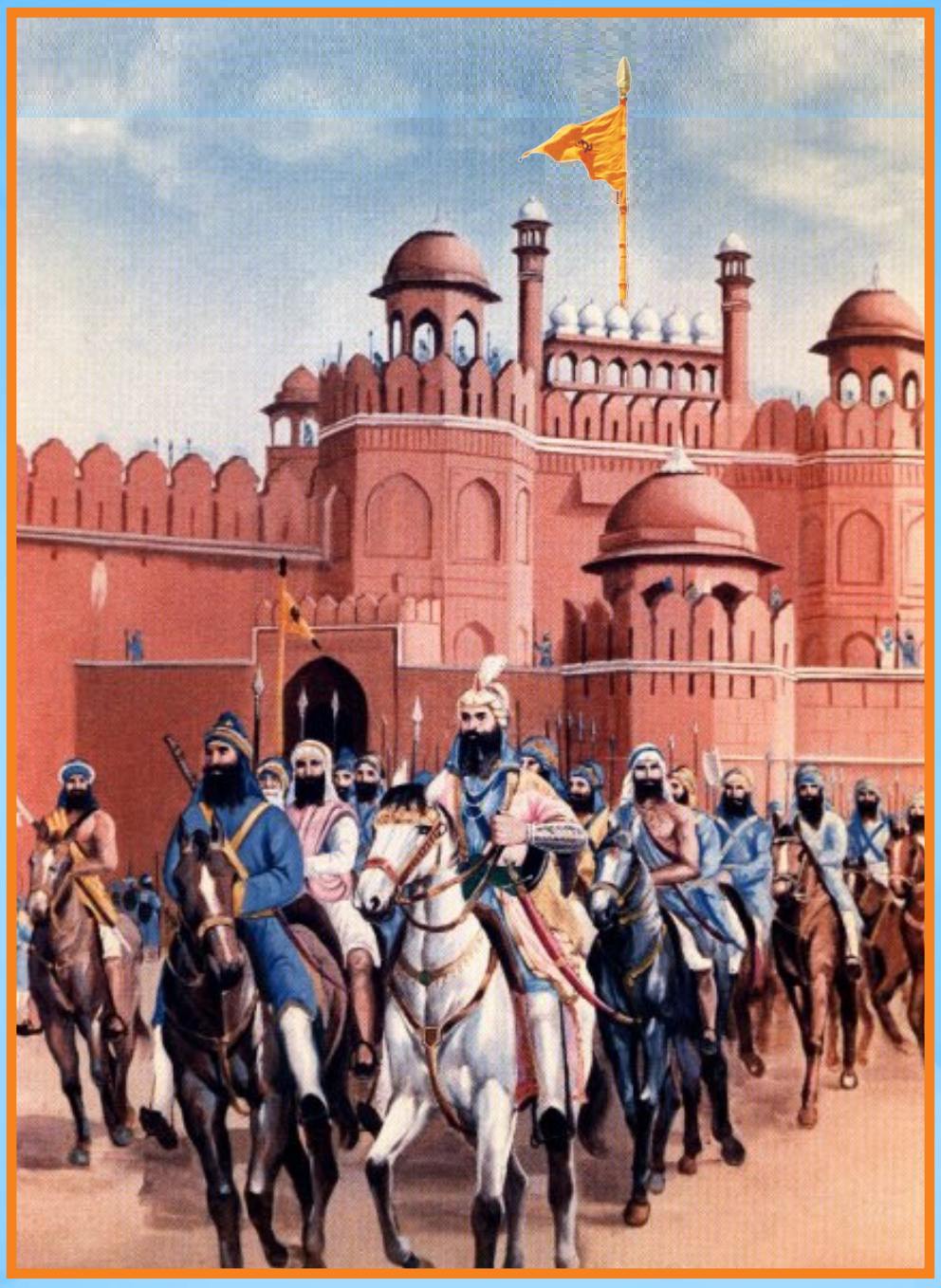

सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ
जिन्होंने दिल्ली फतह कर लाल किले पर खालसाई निशान साहिब फहराया था।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

March 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

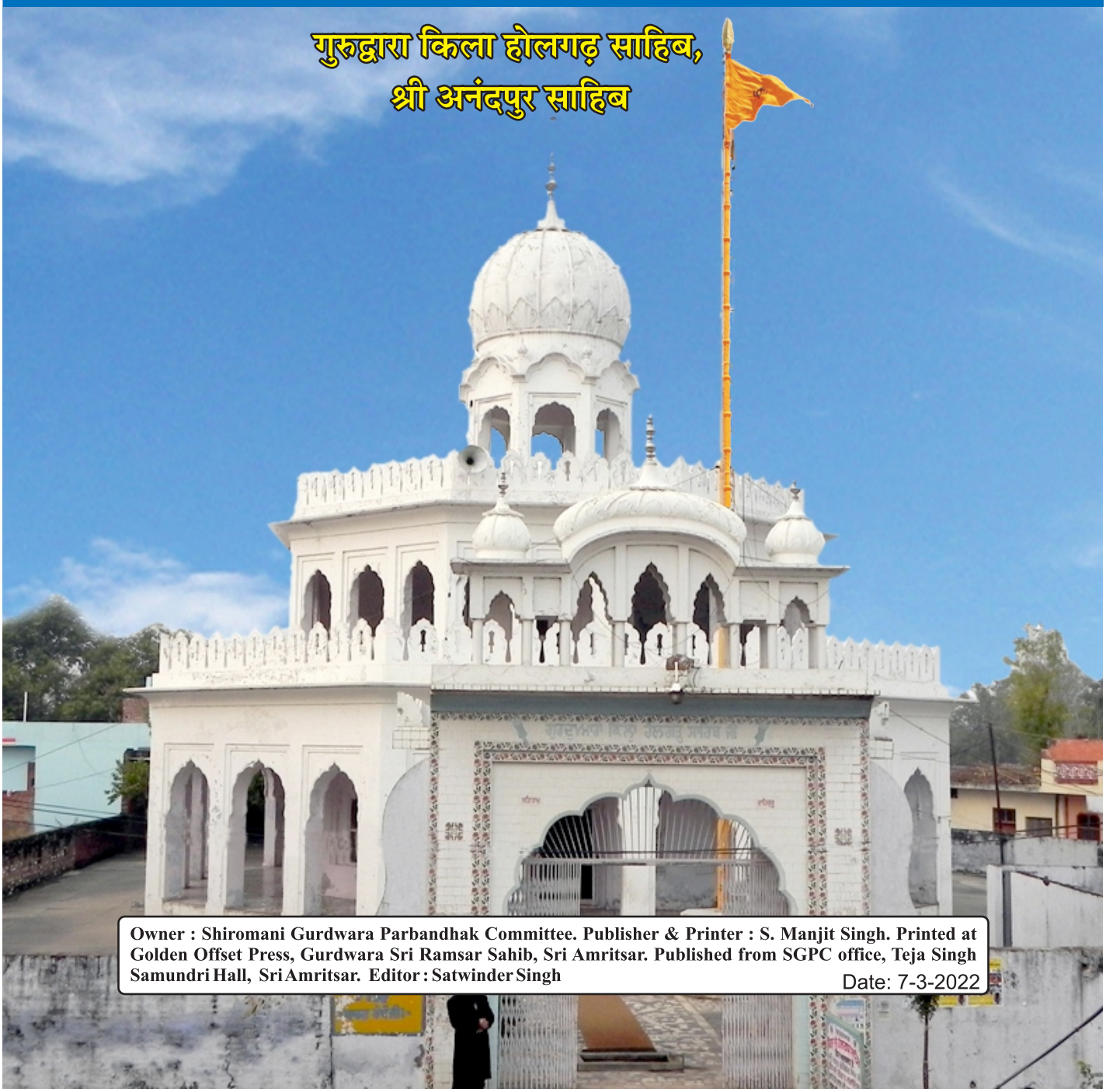

गुरुद्वारा किला होलगढ़ साहिब,
श्री अनंदपुर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-3-2022